‘बगड़ावत देवनारायण’

और

‘गुजरांनो अरेलो’

का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. जिज्ञासा पटेल

‘बगड़ावत देवनारायण’ और ‘गुजरांनो अरेलो’ का तुलनात्मक अध्ययन
डॉ. जिज्ञासा पटेल

Bagdavat Devnarayan and Gujrono Arelo : A Comparative Study

Dr. Jignasa Patel

मूल्य : रु. ४०/-

प्रथम संस्करण : सितम्बर, २००२

प्रकाशक :
डॉ. जिज्ञासा पटेल
गायत्री मंदिर के पास, खेड़ब्रह्मा- ३८३ २५५, जि. साबरकांठा, गुजरात

मुद्रणांकन, मुद्रणसज्जा तथा प्रमुख वितरक :
भाषा संशोधन-प्रकाशन केन्द्र
६, युनाइटेड एवेन्यु, दिनेश मील के पास, वडोदरा ३९० ००७

मुद्रक :
शिवम् ऑफसेट
आजवा रोड, वडोदरा

हिन्दी साहित्य अकादमी की वित्तीय सहायता से प्रकाशित

अर्पण

डॉ. रघुवीर चौधरी,

डॉ. मालती दुबे,

डॉ. मृदुला पारीक,

और

श्री ऊजमभाई पटेल को

सादर....

डॉ. जिज्ञासा पटेल

पूर्व भूमिका

बचपन में रात को सोते समय पिताजी अक्सर हमें 'सोनल बेनरी', 'हाल दे होळंगी', 'गुजरां नो अरेलो' जैसी खेड़ब्रह्मा क्षेत्र के वनवासियों में प्रचलित अद्‌भुत लोककथाएँ सुनाते थे। जिसका मेरे बालमानस पर आकर्षक एवम् प्रभावक असर बना रहा। फलतः बचपन से ही लोकसाहित्य के प्रति मेरी रुचि संवर्धित होती चली। तदन्तर कॉलेज में भाषा एवम् साहित्य की छात्रा के रूप में मेरे अध्ययनकाल के दरम्यान मेरी अपनी साहित्यिक रुचि के कारण पिताजी के द्वारा संपादित 'गुजरां नो अरेलो', 'राठोर वारता', 'तोळी राणी नी वारता' जैसे भील जनजाति के लोकगाथासाहित्य के पठन एवम् परिचय में आयी, जिस से मुझे इस समृद्ध साहित्य की विशदता एवम् गहनता की प्रतीति हुई और लगा कि इस विद्या का संबंध भाषाविज्ञान, संगीतशास्त्र, इतिहास, मानवजीवनविज्ञान आदि शास्त्रों से है।

प्रसिद्ध शास्त्रीय नृत्यज्ञ एवम् अभिनेत्री सुश्री मल्लिका साराभाई द्वारा संचालित 'परफॉर्मिंग आर्ट' की आंतरराष्ट-ीय ख्याति प्राप्त संस्था 'दर्पण अकादमी' ने 'राठोर वारता' एवम् 'गुजरां नो अरेलो' को नाट्यरूप दिया और मैंने अरेलो के एक महत्त्वपूर्ण पात्र भूखिया देवी के चरित्र के द्वारा सहभागी होकर मंचन किया, तब मुझे इन महाकाव्यों की लोकसाहित्यिक सत्त्वशीलता का अनुभव हुआ। जब उक्त महाकाव्यों को नाट्यरूप दिया जा रहा था, तब राजस्थान की दो सशक्त कृतियाँ डॉ. कृष्णकुमार शर्मा द्वारा संपादित 'बगड़ावत लोकगाथा' एवम् लक्ष्मीकुमारी चूड़ावत द्वारा संपादित 'बगड़ावत देवनारायण महागाथा' पढ़ने का सुयोग गुजरात विद्यापीठ ग्रंथालय के सौजन्य से प्राप्त हुआ, तब भीलों में प्रचलित 'गुजरां नो अरेलो' एवं राजस्थान में प्रचलित इस 'बगड़ावत लोक महागाथा' की समानता का पता चला। और मेरे मन में आया कि क्यों न भिन्न-भिन्न प्रदेशों में प्रचलित लोक महाकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए।

मैंने जब मेरे विचार के संबंध में पिताजी से चर्चा की तो उन्होंने आंतरराष्ट-ीय लोकसाहित्य की एक और अनन्य घटना का परिचय दिया कि, केम्ब्रिज युनिवर्सिटी के विद्वान प्रोफेसर डॉ. जे. डी. स्मिथ राजस्थान के ख्यात लोकमहाकाव्य 'पाबूजी रा

दोहा' पर अध्ययन कर रहे हैं, और 'गुजरां नो अरेलो' पढ़ने के लिए गुजराती भाषा सीख रहे हैं तो मुझे लगा कि हमें भी हमारे गौरवशाली लोक महाकाव्यों का अध्ययन अवश्य करना चाहिए। जो आज मेरी मामूली सी सूझ-बूझ, कठिन परिश्रम एवम् पिताजी के समुचित मार्गदर्शन के परिणामरूप आप के समक्ष प्रस्तुत है।

'बगड़ावत लोकगाथा' का संशोधन-संकलन-संपादन डॉ. कृष्णकुमार शर्मा ने राजस्थान के ग्राम-जनपदों में से किया है। तुलना में बगड़ावत लोकगाथा को आधार ग्रंथ मानकर, रानी लक्ष्मीकुमारी चूड़ावत के द्वारा संपादित 'बगड़ावत देवनारायण महागाथा' को सहायक ग्रंथ के रूप में उपयोग किया है।

जिसके साथ तुलना की गई है वह ग्रंथ 'गुजरां नो अरेलो' का संशोधन-संकलन-संपादन डॉ. भगवानदास पटेल ने उत्तर गुजरात के भील आदिवासी पर्वतीय प्रदेश में से किया है।

दोनों भिन्न-भिन्न जाति प्रजाति के लोकमहाकाव्य हैं। एक का प्रादुर्भाव राजस्थान की गूजर जाति की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में हुआ है, जब कि दूसरे का उत्तर गुजरात की भील प्रजाति की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में। दोनों लोकमहाकाव्यों की भिन्न-भिन्न सामाजिक-धार्मिक परिस्थितियाँ होने से दोनों मौखिक महाकाव्यों में बहुत सा साम्य होने के साथ साथ वैषम्य होना भी नितांत स्वाभाविक है।

लोकसंस्कृति का एक बड़ा विभाग लोकवार्ता या लोककथा का है। लोकविद्या के एक गौण विभाग में लोकसाहित्य का स्थान है। लोकसाहित्य जिन लोगों के कंठ से प्रस्फुटित होता है उनकी जीवित सांस्कृतिक संपत्ति है।

लोकसाहित्य के एक गौण विभाग में लोकमहाकाव्य या लोकगाथा का स्थान है। लोकगाथा एक विशिष्ट प्रकार का मौखिक लोकमहाकाव्य है। सामान्यतः इसकी उत्पत्ति किसी प्रेरणादायक अथवा प्रसिद्ध वस्तुगत घटना या जीवन में घटित कार्य-कलाप से होती है। समाज में घटित किसी घटना और उसके प्रमुख चरित्रों के जीवन, उनकी समस्याएँ, उनके प्रेम, क्रोध, संकट, संघर्ष, बलिदान, पराक्रम और मार्मिक भावनाओं का परंपरित वाहक द्वारा वर्णन से बढ़ते-बढ़ते वह रोचक कथा एक भावप्रधान लोकमहाकाव्य बन जाता है।

'बगड़ावत लोकगाथा' एवं 'गुजरां नो अरेलो' के तुलनात्मक अध्ययन से पता चलता है कि दोनों लोकमहाकाव्यों में अपने अपने समाज विशेष के सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक तौरतरीकों, संबंधों, मान्यताओं तथा जीवनादर्शों एवम् जीवन दर्शन का सर्वांगीण चित्र प्रतिबिंबित रहता है। लोकमहाकाव्य में वर्णित चरित्रों की भावनाएँ अपने अपने समाज की प्रचलित मान्यताओं की प्रतीक होती हैं।

चरित्रों के द्वंद्व और संघर्ष उस जमाने के प्रचलित अंतद्वंद्वों को उभारकर प्रस्तुत करते हैं। इस दृष्टि से इन लोकगाथाओं का यदि उस जमाने की प्रचलित सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक स्थितियों की सही जानकारी प्राप्त करने का आधार बनाया जाये तो इस कार्य के लिए वे अत्यन्त उपयोगी साबित हो सकती हैं।

प्रस्तुत तुलनात्मक लेखन को मैंने तद्‌विषयक अपनी थोड़ी सी जानकारी एवम् सीमित संदर्भसाहित्य की मर्यादाओं के साथ बड़े मनोयोग एवम् परिश्रमपूर्वक तैयार किया है। विषय एवम् विषय की विशिष्ट जानकारी तथा अध्ययन की सरलता हेतु मैंने इस तुलनात्मक अध्ययन को पाँच अध्यायों में विभाजित किया है। जिस में मैंने अपेक्षाकृत सम्यक विवेचना प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है।

बगड़ावत देवनारायण की कथनशैली और संक्षिप्त कथा से पुस्तक का प्रारंभ हुआ है। यहाँ डॉ. कृष्णकुमार शर्मा द्वारा संपादित बगड़ावत लोकगाथा के आधार पर बगड़ावत देवनारायण की कथनशैली और संक्षिप्त कथा दी है।

प्रकरण-२ में डॉ. भगवानदास पटेल द्वारा संपादित गुजरां नो अरेलो के आधार पर इस भील लोकमहाकाव्य की कथनशैली की चर्चा की है और उसकी संक्षिप्त कथा दी है।

प्रकरण-३ में दोनों लोक महाकाव्यों का कथन अभिव्यक्ति की दृष्टि से, वर्णनक्रम की दृष्टि से, प्रसंग-घटनाओं की दृष्टि से, चरित्रों की दृष्टि से और मोटिफ (कथाघटक) की दृष्टि से साम्य एवं वैषम्य का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

प्रकरण-४ उपसंहार का है। इस प्रकरण में लोकसंस्कृति एवं लोकवार्ता-लोकविद्या के विभागों का निर्देश कर के लोकसाहित्य एवं लोकमहाकाव्यों के महत्त्व को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है। इस के अलावा चर्चित लोकमहाकाव्यों के चरित्रों की ऐतिहासिकता एवं प्रागैतिहासिकता पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया गया है। मानव पात्र भी देवत्त्व किस तरह प्राप्त करते हैं उसकी चर्चा की गई है और राजन्य संस्कृति के प्रति आम लोगों के विद्रोह एवं संघर्ष को उजागर किया गया है।

प्रस्तुत तुलनात्मक लेखन में मेरे सहायक (मार्गदर्शक) रहे मेरे श्रद्धेय गुरुवर्य तथा राष्ट-भाषा कॉलेज, अहमदाबाद के प्राचार्य श्री ऊजमभाई पटेल के प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। उनकी मदद एवम् मार्गदर्शन से ही मैं इस दुरूह विषय को आसान बना सकी तथा प्रस्तुत समीक्षात्मक लेखन का सम्यक् दृष्टि से काम कर सकी। मैं हृदय से उनकी ऋणानुरागी हूँ।

श्रद्धेय पिताजी के प्रति शब्दों में आभार व्यक्त करना अनुचित होगा। क्योंकि उनके मार्गदर्शन तथा पूरी सहायता के परिणाम स्वरूप मैं अपने इस तुलनात्मक कार्य को पूरा

कर सकी। उनके लोकसाहित्य के विशाल ज्ञान से लाभान्वित हुई इसका मुझे बेहद आनंद है। आदरणीय माँ ने भी इस कार्य को पूर्ण करके उसे प्रकट करने के लिए हमेशा मुझे प्रोत्साहित किया है। मेरा सर सदैव अपने माता-पिता के चरणों में झुका रहेगा।

मैं उन सब लेखकों के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ, जिनके गृंथों से प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में अपने तुलनात्मक अध्ययन में सहायता ली है।

पुस्तक प्रकाशित करने के लिए दिये गये अनुदान के लिए हिन्दी साहित्य अकादमी के अध्यक्ष श्री अम्बाशंकर नागर, गुजरात साहित्य अकादमी के अध्यक्ष भोलाभाई पटेल तथा महामात्र कनैयालाल पंड्या और हिन्दी साहित्य अकादमी परिवार को सादर स्मरण करती हूँ।

आदिवासी तथा आदिवासी साहित्य के लिए सदैव जागृत प्रहरी डॉ. गणेश देवी तथा सुरेखा देवी को मैं सादर स्मरण करती हूँ। प्रकाशन की समगृ जिम्मेदारी जिनके सिर पर है वे सुश्री अरुणा जोशी तथा भाषा केन्द्र परिवार के सब सहभागीजन को याद करती हूँ।

दोषरहित मुद्रण के लिए मैं श्री नीरजभाई केंगे की विशेष आभारी हूँ।

माता या पिता द्वारा लेखित या संपादित पुस्तकों पर काम करने का सद्‌भाग्य हर किसी को नहीं मिलता पर मुझे पिताजी द्वारा संपादित 'गुजरां नो अरेलो' पर तुलनात्मक काम करने को मिला यह मेरा सद्‌भाग्य है।

जिज्ञासा पटेल
गायत्री मंदिर के पास, खेड़बृह्मा ३८३ २५५
जि. साबरकांठा, गुजरात

अनुक्रमणिका

बॅक पेज मेटर

झेलु भम्मरिये चौराहे पर आकर खड़ी रह जाती है। रखमा राठोड़िन कहती है, ''देवरजी झेलु आयी है। उसे वापस भेज दो। मेरा कहा नहीं मानोगे तो गरीओरकोट में अंधकार छा जायेगा!'' भोजा कहता है, ''भौजी, आँगन में आया हुआ बछड़ा और घर पर आयी हुई नारी को हम घर से निकालेंगे नहीं। चाहे प्राण चले जाये।''

(गुजरांनो अरेलो)

देवीने अपने चक्र से नेवाजी का मस्तक काट लिया। मस्तक कटते ही वीर नेवा के मस्तक के स्थान पर कमल का पुष्प आ गया। वक्ष में आँखें निकल आईं। वे मस्तक बिना ही युद्ध करने लगे। चंद्र और सूर्य यह युद्ध देखने लगे। मेघमाला सहित इन्द्र भी यह युद्ध देखने आया।

(बगड़ावत लोकगाथा)

रु.

किंमत : ४० /-

प्रकाशक : भाषा संशोधन-प्रकाशन केन्द्र, वडोदरा, मुद्रक : शिवम् ऑफसेट, वडोदरा

‘बगड़ावत देवनारायण’
और
‘गुजरांनो अरेलो’
का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. जिज्ञासा पटेल

'बगड़ावत देवनारायण' और 'गुजरांनो अरेलो' का तुलनात्मक अध्ययन
डॉ. जिज्ञासा पटेल

Bagdavat Devnarayan and Gujrono Arelo : A Comparative Study

Dr. Jignasa Patel

मूल्य : रु. ४०/-

प्रथम संस्करण : सितम्बर, २००२

प्रकाशक :
डॉ. जिज्ञासा पटेल
गायत्री मंदिर के पास, खेड़ब्रह्मा- ३८३ २५५, जि. साबरकांठा, गुजरात

मुद्रणांकन, मुद्रणसज्जा तथा प्रमुख वितरक :
भाषा संशोधन-प्रकाशन केन्द्र
६, युनाइटेड एवेन्यु, दिनेश मील के पास, वडोदरा ३९० ००७

मुद्रक :
शिवम् ऑफसेट
आजवा रोड, वडोदरा

हिन्दी साहित्य अकादमी की वित्तीय सहायता से प्रकाशित

अर्पण

डॉ. रघुवीर चौधरी,

डॉ. मालती दुबे,

डॉ. मृदुला पारीक,

और

श्री ऊजमभाई पटेल को

सादर....

डॉ. जिज्ञासा पटेल

पूर्व भूमिका

बचपन में रात को सोते समय पिताजी अक्सर हमें 'सोनल बेनरी', 'हाल दे होळंगी', 'गुजरां नो अरेलो' जैसी खेड़ब्रह्मा क्षेत्र के वनवासियों में प्रचलित अद्‌भुत लोककथाएँ सुनाते थे। जिसका मेरे बालमानस पर आकर्षक एवम् प्रभावक असर बना रहा। फलतः बचपन से ही लोकसाहित्य के प्रति मेरी रुचि संवर्धित होती चली। तदन्तर कॉलेज में भाषा एवम् साहित्य की छात्रा के रूप में मेरे अध्ययनकाल के दरम्यान मेरी अपनी साहित्यिक रुचि के कारण पिताजी के द्वारा संपादित 'गुजरां नो अरेलो', 'राठोर वारता', 'तोळी राणी नी वारता' जैसे भील जनजाति के लोकगाथासाहित्य के पठन एवम् परिचय में आयी, जिस से मुझे इस समृद्ध साहित्य की विशदता एवम् गहनता की प्रतीति हुई और लगा कि इस विद्या का संबंध भाषाविज्ञान, संगीतशास्त्र, इतिहास, मानवजीवनविज्ञान आदि शास्त्रों से है।

प्रसिद्ध शास्त्रीय नृत्यज्ञ एवम् अभिनेत्री सुश्री मल्लिका साराभाई द्वारा संचालित 'परफॉर्मिंग आर्ट' की आंतरराष्ट-ीय ख्याति प्राप्त संस्था 'दर्पण अकादमी' ने 'राठोर वारता' एवम् 'गुजरां नो अरेलो' को नाट्यरूप दिया और मैंने अरेलो के एक महत्त्वपूर्ण पात्र भूखिया देवी के चरित्र के द्वारा सहभागी होकर मंचन किया, तब मुझे इन महाकाव्यों की लोकसाहित्यिक सत्त्वशीलता का अनुभव हुआ। जब उक्त महाकाव्यों को नाट्यरूप दिया जा रहा था, तब राजस्थान की दो सशक्त कृतियाँ डॉ. कृष्णकुमार शर्मा द्वारा संपादित 'बगड़ावत लोकगाथा' एवम् लक्ष्मीकुमारी चूड़ावत द्वारा संपादित 'बगड़ावत देवनारायण महागाथा' पढ़ने का सुयोग गुजरात विद्यापीठ गूंथालय के सौजन्य से प्राप्त हुआ, तब भीलों में प्रचलित 'गुजरां नो अरेलो' एवं राजस्थान में प्रचलित इस 'बगड़ावत लोक महागाथा' की समानता का पता चला। और मेरे मन में आया कि क्यों न भिन्न-भिन्न प्रदेशों में प्रचलित लोक महाकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए।

मैंने जब मेरे विचार के संबंध में पिताजी से चर्चा की तो उन्होंने आंतरराष्ट-ीय लोकसाहित्य की एक और अनन्य घटना का परिचय दिया कि, केम्ब्रिज युनिवर्सिटी के विद्वान प्रोफेसर डॉ. जे. डी. स्मिथ राजस्थान के ख्यात लोकमहाकाव्य 'पाबूजी रा

दोहा' पर अध्ययन कर रहे हैं, और 'गुजरां नो अरेलो' पढ़ने के लिए गुजराती भाषा सीख रहे हैं तो मुझे लगा कि हमें भी हमारे गौरवशाली लोक महाकाव्यों का अध्ययन अवश्य करना चाहिए। जो आज मेरी मामूली सी सूझ-बूझ, कठिन परिश्रम एवम् पिताजी के समुचित मार्गदर्शन के परिणामरूप आप के समक्ष प्रस्तुत है।

'बगड़ावत लोकगाथा' का संशोधन-संकलन-संपादन डॉ. कृष्णकुमार शर्मा ने राजस्थान के ग्राम-जनपदों में से किया है। तुलना में बगड़ावत लोकगाथा को आधार गृंथ मानकर, रानी लक्ष्मीकुमारी चूड़ावत के द्वारा संपादित 'बगड़ावत देवनारायण महागाथा' को सहायक गृंथ के रूप में उपयोग किया है।

जिसके साथ तुलना की गई है वह गृंथ 'गुजरां नो अरेलो' का संशोधन-संकलन-संपादन डॉ. भगवानदास पटेल ने उत्तर गुजरात के भील आदिवासी पर्वतीय प्रदेश में से किया है।

दोनों भिन्न-भिन्न जाति प्रजाति के लोकमहाकाव्य हैं। एक का प्रादुर्भाव राजस्थान की गूजर जाति की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में हुआ है, जब कि दूसरे का उत्तर गुजरात की भील प्रजाति की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में। दोनों लोकमहाकाव्यों की भिन्न-भिन्न सामाजिक-धार्मिक परिस्थितियाँ होने से दोनों मौखिक महाकाव्यों में बहुत सा साम्य होने के साथ साथ वैषम्य होना भी नितांत स्वाभाविक है।

लोकसंस्कृति का एक बड़ा विभाग लोकवार्ता या लोककथा का है। लोकविद्या के एक गौण विभाग में लोकसाहित्य का स्थान है। लोकसाहित्य जिन लोगों के कंठ से प्रस्फुटित होता है उनकी जीवित सांस्कृतिक संपत्ति है।

लोकसाहित्य के एक गौण विभाग में लोकमहाकाव्य या लोकगाथा का स्थान है। लोकगाथा एक विशिष्ट प्रकार का मौखिक लोकमहाकाव्य है। सामान्यतः इसकी उत्पत्ति किसी प्रेरणादायक अथवा प्रसिद्ध वस्तुगत घटना या जीवन में घटित कार्य-कलाप से होती है। समाज में घटित किसी घटना और उसके प्रमुख चरित्रों के जीवन, उनकी समस्याएँ, उनके प्रेम, क्रोध, संकट, संघर्ष, बलिदान, पराक्रम और मार्मिक भावनाओं का परंपरित वाहक द्वारा वर्णन से बढ़ते-बढ़ते वह रोचक कथा एक भावप्रधान लोकमहाकाव्य बन जाता है।

'बगड़ावत लोकगाथा' एवं 'गुजरां नो अरेलो' के तुलनात्मक अध्ययन से पता चलता है कि दोनों लोकमहाकाव्यों में अपने अपने समाज विशेष के सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक तौरतरीकों, संबंधों, मान्यताओं तथा जीवनादर्शों एवम् जीवन दर्शन का सर्वांगीण चित्र प्रतिबिंबित रहता है। लोकमहाकाव्य में वर्णित चरित्रों की भावनाएँ अपने अपने समाज की प्रचलित मान्यताओं की प्रतीक होती हैं।

चरित्रों के द्वंद्व और संघर्ष उस जमाने के प्रचलित अंतद्वंद्वों को उभारकर प्रस्तुत करते हैं। इस दृष्टि से इन लोकगाथाओं का यदि उस जमाने की प्रचलित सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक स्थितियों की सही जानकारी प्राप्त करने का आधार बनाया जाये तो इस कार्य के लिए वे अत्यन्त उपयोगी साबित हो सकती हैं।

प्रस्तुत तुलनात्मक लेखन को मैंने तद्विषयक अपनी थोड़ी सी जानकारी एवम् सीमित संदर्भसाहित्य की मर्यादाओं के साथ बड़े मनोयोग एवम् परिश्रमपूर्वक तैयार किया है। विषय एवम् विषय की विशिष्ट जानकारी तथा अध्ययन की सरलता हेतु मैंने इस तुलनात्मक अध्ययन को पाँच अध्यायों में विभाजित किया है। जिस में मैंने अपेक्षाकृत सम्य्क विवेचना प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है।

बगड़ावत देवनारायण की कथनशैली और संक्षिप्त कथा से पुस्तक का प्रारंभ हुआ है। यहाँ डॉ. कृष्णकुमार शर्मा द्वारा संपादित बगड़ावत लोकगाथा के आधार पर बगड़ावत देवनारायण की कथनशैली और संक्षिप्त कथा दी है।

प्रकरण-२ में डॉ. भगवानदास पटेल द्वारा संपादित गुजरां नो अरेलो के आधार पर इस भील लोकमहाकाव्य की कथनशैली की चर्चा की है और उसकी संक्षिप्त कथा दी है।

प्रकरण-३ में दोनों लोक महाकाव्यों का कथन अभिव्यक्ति की दृष्टि से, वर्णनक्रम की दृष्टि से, प्रसंग-घटनाओं की दृष्टि से, चरित्रों की दृष्टि से और मोटिफ (कथाघटक) की दृष्टि से साम्य एवं वैषम्य का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

प्रकरण-४ उपसंहार का है। इस प्रकरण में लोकसंस्कृति एवं लोकवार्ता-लोकविद्या के विभागों का निर्देश कर के लोकसाहित्य एवं लोकमहाकाव्यों के महत्त्व को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है। इस के अलावा चर्चित लोकमहाकाव्यों के चरित्रों की ऐतिहासिकता एवं प्रागैतिहासिकता पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया गया है। मानव पात्र भी देवत्त्व किस तरह प्राप्त करते हैं उसकी चर्चा की गई है और राजन्य संस्कृति के प्रति आम लोगों के विद्रोह एवं संघर्ष को उजागर किया गया है।

प्रस्तुत तुलनात्मक लेखन में मेरे सहायक (मार्गदर्शक) रहे मेरे श्रद्धेय गुरुवर्य तथा राष्ट-भाषा कॉलेज, अहमदाबाद के प्राचार्य श्री ऊजमभाई पटेल के प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। उनकी मदद एवम् मार्गदर्शन से ही मैं इस दुरूह विषय को आसान बना सकी तथा प्रस्तुत समीक्षात्मक लेखन का सम्यक् दृष्टि से काम कर सकी। मैं हृदय से उनकी ऋणानुरागी हूँ।

श्रद्धेय पिताजी के प्रति शब्दों में आभार व्यक्त करना अनुचित होगा। क्योंकि उनके मार्गदर्शन तथा पूरी सहायता के परिणाम स्वरूप मैं अपने इस तुलनात्मक कार्य को पूरा

कर सकी। उनके लोकसाहित्य के विशाल ज्ञान से लाभान्वित हुई इसका मुझे बेहद आनंद है। आदरणीय माँ ने भी इस कार्य को पूर्ण करके उसे प्रकट करने के लिए हमेशा मुझे प्रोत्साहित किया है। मेरा सर सदैव अपने माता-पिता के चरणों में झुका रहेगा।

मैं उन सब लेखकों के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ, जिनके गूंथों से प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में अपने तुलनात्मक अध्ययन में सहायता ली है।

पुस्तक प्रकाशित करने के लिए दिये गये अनुदान के लिए हिन्दी साहित्य अकादमी के अध्यक्ष श्री अम्बाशंकर नागर, गुजरात साहित्य अकादमी के अध्यक्ष भोलाभाई पटेल तथा महामात्र कनैयालाल पंड्या और हिन्दी साहित्य अकादमी परिवार को सादर स्मरण करती हूँ।

आदिवासी तथा आदिवासी साहित्य के लिए सदैव जागृत प्रहरी डॉ. गणेश देवी तथा सुरेखा देवी को मैं सादर स्मरण करती हूँ। प्रकाशन की समगृ जिम्मेदारी जिनके सिर पर है वे सुश्री अरुणा जोशी तथा भाषा केन्द्र परिवार के सब सहभागीजन को याद करती हूँ।

दोषरहित मुद्रण के लिए मैं श्री नीरजभाई केंगे की विशेष आभारी हूँ।

माता या पिता द्वारा लेखित या संपादित पुस्तकों पर काम करने का सद्भाग्य हर किसी को नहीं मिलता पर मुझे पिताजी द्वारा संपादित 'गुजरां नो अरेलो' पर तुलनात्मक काम करने को मिला यह मेरा सद्भाग्य है।

जिज्ञासा पटेल
गायत्री मंदिर के पास, खेड़ब्रह्मा ३८३ २५५
जि. साबरकांठा, गुजरात

अनुक्रमणिका

बॅक पेज मेटर

झेलु भम्मरिये चौराहे पर आकर खड़ी रह जाती है। रखमा राठोड़िन कहती है, ''देवरजी झेलु आयी है। उसे वापस भेज दो। मेरा कहा नहीं मानोगे तो गरीओरकोट में अंधकार छा जायेगा!'' भोजा कहता है, ''भौजी, आँगन में आया हुआ बछड़ा और घर पर आयी हुई नारी को हम घर से निकालेंगे नहीं। चाहे प्राण चले जाये।''

(गुजरांनो अरेलो)

देवीने अपने चक्र से नेवाजी का मस्तक काट लिया। मस्तक कटते ही वीर नेवा के मस्तक के स्थान पर कमल का पुष्प आ गया। वक्ष में आँखें निकल आईं। वे मस्तक बिना ही युद्ध करने लगे। चंद्र और सूर्य यह युद्ध देखने लगे। मेघमाला सहित इन्द्र भी यह युद्ध देखने आया।

(बगड़ावत लोकगाथा)

रु.

किंमत : ४० /-

प्रकाशक : भाषा संशोधन-प्रकाशन केन्द्र, वडोदरा, मुद्रक : शिवम् ऑफसेट, वडोदरा

बगड़ावत देवनारायण की कथनशैली और संक्षिप्त कथा

बगड़ावत देवनारायण की कथनशैली

बगड़ावत लोककथा के गायक राजस्थान के सभी भागों में मिलते हैं। बगड़ावत लोकगाथा को 'भोपा' तीन-चार घंटे रोज गाकर एक महीने में पूरा करते हैं। इस गाथा की कथा राजस्थान के गायकों द्वारा लगभग एक सी ही कही जाती है। घटनाक्रम में अंतर अवश्य पड़ जाता है। इस गाथा के गायक श्रोता के कहने पर इसे अंश रूपमें भी गाते हैं। लोकगाथा की समस्त अनिवार्य विशेषताएँ इस गाथा में है। इस लोकगाथा में चौबीस बगड़ावतों की कथा है। ये चौबीस बगड़ावत बाघजी के पुत्र थे। कुछ गायक चौबीस बगड़ावतों से गाथा प्रारंभ करते हैं और इनकी उत्पत्ति के संबंध में गद्य में कथा कह देते हैं। जब कुछ गायक इनके पिता बाघजी की उत्पत्ति से कथा प्रारंभ करते हैं। बगड़ावत लोकगाथा राजस्थान के स्थानों से संबंधित यहाँ की वीर संस्कृति की प्रतिनिधि है। भारत के अन्य प्रदेश में इस गाथा का प्रचलन नहीं है।

इस लोकगाथा के गायक देवनारायण के भोपे कहलाते हैं। ये देवजी के मंदिर में पूजा भी करते हैं और श्रम भी करते हैं। शीत ऋतु की रात्रियों में यह गाई जाती है। ग्रीष्मऋतु में इसे गाया नहीं जा सकता। वीररसप्रधान होने के कारण गायक उत्साह और ओज से भर जाता है, अतः बहुत परिश्रम करना पड़ता है। इस में दो गायक होते हैं। एक गायक विशिष्ट राजस्थानी वेशभूषा-सिर पर आगे से उठी राजपूती ढंगकी पगड़ी और शरीर पर नीचे की ओर घेरदार लाल रंग का जामा पहनता है। इस जामे पर जरी का काम होता है। पैरों में श्वेत चुस्त पायजामा होता है। हाथ में बीन (एक तंतुवाद्य) रहती है। दूसरे गायक के हाथ में एक लकड़ी के सहारे विशाल दीपक लटका रहता है। वस्तुतः यह दूसरा व्यक्ति सहायक होता है, जो गाथा की गंभीरता में कहीं कहीं हास्य का पुट देता चलता है। कभी कभी दोनों गायक साथ साथ भी आलाप करते हैं, बीन वाले गायक के साथ एक लकड़ी की छड़ी भी होती है। इस गाथा के साथ गायक लोकचित्रपट (फड़ या पड़) का उपयोग करता है। यह एक ११-१२ गज लंबा और दो गज चौड़ा परदा होता

है। इस पर बगड़ावतों द्वारा किए गए वीरकृत्यों के चित्र बने होते हैं। गाथा गाते समय गायक संबंधित प्रसंग को छड़ी के संकेत से दीपक के प्रकाश में दिखलाता है। गाते समय गायक इस परदे के सामने लययुक्त गति से बीन बजाता हुआ घूमता है, दूसरे सिर पर पहुँचकर कथा को आलाप लेकर गाता है और तब तीव्र गति से घुंघरूओं की ध्वनि करता हुआ चित्र में संबंधित स्थल तक पहुँचकर छड़ी से दिखलाता है। इस प्रकार गायक को समस्त कथा में अभिनयशील रहना पड़ता है। कथा के प्रारंभ एवं अंत में गायक आरती करता है। बीच-बीच में गायक का अन्य साथी शंख बजाता है। जब कोई ग्रामवासी कुछ नैवेद्य चढ़ाता है तो उसी के नाम का शंख बजाया जाता है। जब गायक कथा कहता है तो बीन नहीं बजाता। आलाप एवं द्रुत गति से जब वह पंक्ति गाता है तभी बीन का प्रयोग करता है। प्रत्येक पंक्ति की धुन एक ही रखता है।

गाथा में वार्ता और चौबोले होते हैं। चौबोलों में जहाँ कथा का सूत्र टूटता है, वहाँ गायक वार्ता से उन्हें जोड़ता चलता है। चौबोले लगभग सभी तुकांत हैं। वार्ता की भाषा में पर्याप्त प्रवाह है और कहीं कहीं वर्णन में सुंदर काव्यात्मकता भी है। एक ही पंक्ति की आवृत्ति समस्त गाथा में नहीं होती। प्रसंग के अनुसार यह आवृत्ति वाली पंक्ति बदलती रहती है। यह इस गाथा की विशेषता है।

बगड़ावत देवनारायण की संक्षिप्त कथा

बीसलदेव, आनाजी और मांड़लजी तीन भाई थे। बीसलदेव अजमेर के राजा थे। मांड़लजी के पुत्र हरिसिंहजी थे और हरिसिंह के पुत्र बाघजी थे। बाघजी के चौबीस पुत्र थे, ये बगड़ावत कहलाते थे। बगड़ावतों का वंशक्रम इस प्रकार है :

मांड़लजी → हरिसिंहजी → बाघजी → २४ बगड़ावत।

अजमेर में बीसलदेव चौहान शासन करते थे। हरिरामसिंह उन के आश्रय में रहते थे। वे बहुत अच्छे शिकारी थे और नित्य बाघ का शिकार करते थे। अजमेर में एक पूर्ण तपस्विनी, बाल विधवा लीला नामकी स्त्री थी, वह एक रात्रि के अन्तिम प्रहर में पुष्कर घाट पर स्नान कर लौट रही थी। इसी समय हरिराम भी शिकार में मारे गये बाघ को कंधे पर ड़ाले हुए सामने से आ रहे थे। लीला की दृष्टि उस पर पड़ी और वह दृष्टि विनिमय में ही गर्भवती हो गई। यह रहस्य न तो हरिराम ही जान सका और न लीला ही। कुछ मास पश्चात लीला के उदर की वृद्धि होने लगी। यह बात जनचर्चा का विषय बनी और राजा

तक भी पहुँची। राजा ने लीला को बुलवाया और सत्यासत्य प्रकट करने की आज्ञा दी। लीला ने हरिरामसिंह वाली घटना बतला दी पर वह हरिसिंह का नाम नहीं जानती थी। उसने वह दिन और समय बतालाया जब सिंह सहित पुरुष उसे मिला था। राजा ने पता लगवा कर जाना कि वह हरिरामसिंह था, राजा ने हरिसिंह को बुलाकर उसे लीला को घर ले जाने की आज्ञा दी। समय आने पर लीला को पुत्र हुआ, पर उसका मुख सिंह का और शेष शरीर मनुष्य का था। इसका नाम बाघसिंह रखा गया। पुत्र की विचित्रता से भयभीत पिता ने उसे जंगल में फैक दिया। पर बाघसिंह मरा नहीं। उपर से चील ने छाया की और सर्प ने छत्र किया। बालक अँगूठा चूसने लगा। राजा के कहने से हरिसिंह पुत्र को ले आया। राजा ने बाघसिंह के नित्य तीन अपराध क्षमा करने का बचन दिया। बाघजी बड़े हुए। एक दिन वे उपवन में गये, जहाँ लड़कियाँ झूला झूल रही थीं। बाघजी ने झूला उतार ऊँचा टांग दिया। लड़कियों ने बाघजी से झूला उतार देने की प्रार्थना की। बाघजी ने कहा- ''तुम सब मेरे चारों ओर सात-सात चक्कर लगाओ तो मैं झूला झुलाऊँ।'' झूलने को उत्सुक लड़कियों ने बिना परिणाम सोचे स्वीकार कर लिया। उपवन में एक लंगड़ा ब्राह्मण था। उसने वेद पढ़ा और लड़कियों ने परिक्रमा ली। इस प्रकार सात भँवर सम्पन्न हो गये। बाघजी ने लड़कियों को झूला झुलाया। ये विवाह गुप्त ही रहे।

वयस्क होने पर उन लड़कियों के माता-पिता उन के विवाह के मुहूर्त ढूँढ़ने लगे। पर लग्न मिलता ही नहीं। तब माता-पिता ने लड़कियों से पूछा। उन्होंने उपवन वाली घटना बतलाई। सब लोक राजा के पास गये पर राजा भी क्या करता ? वह बाघजी के नित्य तीन अपराध तक क्षमा करने का वचन दे चुका था। तब सब लड़कियों में से तेरह बाघजी ने रख ली शेष को धन देकर लौटा दिया। अवसर देखकर वर माँगने लंगड़ा वेद पाठी भी आया और दक्षिणा माँगने लगा। बाघजी ने एक कन्या उसे दे दी। शेष बारह स्त्रियों से बाघजी के २४ पुत्र हुए। ये बाघजी के पुत्र होने से बगड़ावत कहलाये। राजा ने इन्हें गाँव दिये, धन दिया। इन के गाँव गोठ कहलाते थे। इनके बहुत गायें थी। ये उन्हें चराते थे। सब से बड़े पुत्र का नाम सवाई भोज था।

भोज गायें चराते - चराते देखता कि एक गाय नित्य प्रातःआकर उन की गायों में मिल जाती और सायंकाल जंगल में विलीन हो जाती। एक दिन अनुगमन करने पर उसने देखा कि वह शंकर भगवान की गाय है और देवी पार्वती स्वयं उसका दोहन करती

हैं। उसने गाय की चराई माँगी। भगवान शंकर ने एक कड़ाही में तेल गरम करने को रखा और स्वयं कुछ देर के लिए कहीं चले गये। भोज से कह गये - ''बेटा, भंडार की चाभी रख, पर खोलकर देखना नहीं।'' भोज से रहा न गया, उसने धूनी उलटी कर दी तो देखा - उस में नरमुंड हँस रहे हैं। उसने पूछा, ''तुम क्यों हँसते हो? मुंड बोले, 'तू भी यहीं आयेगा। वह साधु तुझे तेल में पकाकर खायेगा।'' कुछ देर में भगवान शंकर आये और भोज से कड़ाही के चतुर्दिक् घूमने को कहा। भोज ने वैसा ही किया, पर वह सावधान था। ज्यों ही शंकर ने पकड़ा, वह छटक कर दूसरी ओर चला गया। अब पुनः चक्कर लगाने लगा। शंकर ने पुनः पकड़ना चाहा। भोज को क्रोध आ गया। इसने घूमकर शंकर को पकड़ा और उठाकर कड़ाही में डाल दिया। तब शंकर ने प्रसन्न होकर पारसमणि, बूँली घोड़ी, बीजल खड्ग, बारह वर्ष की काया और बारह वर्ष की माया प्रदान की। यह सब संपदा लेकर सवाई भोज भाईयों के पास लौट आया। भाई परस्पर विचार करने लगे, इस धन का क्या करें? किसीने कहा गाड़ दो; किसीने कहा मंदिर बनवाओ। नेवाजी ने कहा, ''सब वस्तुएँ नष्ट हो जाती हैं। जब तक काया है, तभी तक सबकुछ है। अतः धन को खाना और खरचना ही चाहिये।'' नेवाजी का कथन सभी को भाया। चौबीस हजार घोड़े खरीदे गये। उन्हें आभूषणों से सजाया गया और उन पर चढ़कर सब भाई देश-देशांतर की यात्रा को चले। चलते-चलते राणा की राण में पहुँचे। ग्रामसीमा पर पहुँचकर भोज ने कहा, ''भाई! ग्रामसीमा आ गई। डेरा कहाँ डालें?'' नेवाजी ने कहा, ''राणा का नवलाख का उपवन है। इसे नष्ट करो। क्यों कि या तो विरोध करने से कुछ मिलता है या अनुरोध करने पर । अपने जैसे बीर भी यदि सीमा पर आकर चले गये और किसीने न जाना तो आने का लाभ ही क्या। अतः विरोध ही करना चाहिए।'' ऐसा विचार करके नेवाजी ने उपवन के माली को स्वर्ण मुद्राएँ दीं और उपवन के द्वार खोलने को कहा। माली ने मुद्रा तो ले ली पर द्वार नहीं खोले और नेवाजी को धमकी भी देने लगा। नेवाजी ने उपवन के द्वार तोड़ दिये। माली और मालिन भाग कर राणा के पास गये। राणा ने अपने भाई नीमाजी को उपवन नष्ट करनेवाले का पता लगाने को भेजा। नीमाजी सेना लेकर आये। आगे एक सूकर जा रहा था। नीमाजी ने मारना चाहा, पर न मार सके। उपवन में से नेवाजी ने सूकर का पीछा किया और मार गिराया। यह देखकर नीमाजी ने सोचा कि सामने आया सूकर न मार सके तो विरोध करना व्यर्थ होगा। इन वीरों से भाईचारा करना ही भला है। अतः नीमाजी ने नेवाजी से परिचय

पूछा और पात्र बदल कर भाई बन गये। नीमाजी राणा के पास गये। राणा भी ऐसे वीरों की मित्रता सुनकर प्रसन्न ही हुआ और बगड़ावतों के स्वागत हेतु मदिरा व माँस भिजवाया। तब नेवाजी ने सवाई भोज से कहा - ''भाई साहब ! हमें भी राणा का ऐसा ही स्वागत करना चाहिए, तभी समान संबंध होगा।'' सवाई भोज ने नेवाजी से मदिरा का पता करने के लिए कहा, जिस से राणा का स्वागत किया जा सके। अश्व पर चढ़ कर नेवाजी राण की सर्वाधिक समृद्ध कलाल पातू के घर गये। उसके आँगन के फर्श काँच के थे। अश्व के दौड़ने से काँच टूट गये। यह देख कलाली की लड़कियाँ लंबे-लंबे बाँस लेकर आई थीं। नेवाजी ने यह सोचकर कि स्त्रियों से बात बढ़ाना ठीक नहीं है, लौट आये और पुनः सब भाई एकत्रित होकर कलाली के घर गये। कलाली ने कहा, ''आँगन फोड़ने से क्या लाभ है ? मदिरा पीनी है, तो अपनी बूँली घोड़ी के गहने रख दो और मदिरा पीओ !'' तब सवाई भोज ने एक अमूल्य हार कलाली को दिया। कलाली ने सभी जौहरियों को दिखलाया, पर कोई उसका मूल्य न आँक सका। कलाली बगड़ावतों के महत्त्व को पा गयी और हार लौटा दिया। तब उसने एक शर्त लगाकर मदिरा पीने को कहा, ''यदि बगड़ावत पूरी मदिरा पी लेंगे तो वह मदिरा का मूल्य नहीं लेगी।'' सवाई भोज ने शर्त स्वीकार की और सोखा पीर की सहायता से सम्पूर्ण मदिरा हाथ में ले ली। तब भी हाथ नहीं भरा। कलाली हार गयी। वह बगड़ावतों की धर्म की बहिन बन गई।

मदिरा आदि का प्रबंध करके बगड़ावत पर्वत पर पहुँचे। राणा को भी बुलाया गया। माँस का प्रबंध हुआ और मतवाल होने लगी। सवा लाख की मदिरा पी गई। नीचे गिरी मदिरा के छींटे वासुकि नागराज की मणि को लगे। वह क्रोधित होकर के बाहर आया और एक बैल को चरते देख उस से पूछा कि पृथ्वी पर मदिरा किसने पी है ? बैल ने कहा, ''बगड़ावत मतवाल कर रहे हैं, वही मदिरा पाताल में पहुँची है।'' यह सुनकर आश्चर्यचकित हुआ वासुकि भगवान विष्णु के पास गया और संपूर्ण घटना सुनाई। भगवान ने प्रतिकार का आश्वासन दिया। भगवान ने सभी देवी-देवताओं को बगड़ावतों का नाश करने के लिए जाने को कहा, पर कोई भी प्रस्तुत न हुआ। सबने कहा कि बगड़ावत उनके भक्त हैं। भगवान विष्णु यह सोचकर कि बगड़ावत कैसे भक्त हैं, देखने आये। कोढ़ी का रूप धरकर वे परीक्षा लेने पधारे। नेवाजी त्रिकालदर्शी थे। उन्हों ने भोज से कहा, ''भाई, भगवान आ रहे हैं। कोढ़ी के रूप में। आगे-आगे मक्खियों का समूह है।'' तुरंत सब भाइयों ने स्नान किया और गंगाजल लेकर खड़े हो गये। कोढ़ी रूप

भगवान को स्नान कराया और रक्त जल युक्त चरणामृत का पान करने लगे। भगवान दंग रह गये और सवाई भोज का हाथ पकड़ लिया। भोज ने भगवान से घर चलने को कहा। भगवान ने कहा, ''पीछे देखो'' और पीछे देखते ही भगवान अन्तर्धान हो गये।

यह समझ कर कि स्त्रियों को ठगना सुलभ है, भगवान सवाई भोज के घर गये। सवाई भोज की स्त्री नित्य सवा मन कच्चा और सवा मन पक्का अनाज दान करती व इसके उपरांत स्नान करती थी। उस दिन भी कर्तव्य पूर्ण कर नग्न होकर स्नान करने बैठी ही थी कि भगवान ने अलख जगाई। रानी ने दासियों को भेजा, पर भगवान ने दासियों के हाथ से भिक्षा लेना अस्वीकार कर दिया और शाप देने को प्रस्तुत हो गये। दासियों ने रानी से कहा। रानी समझ गई और नग्न ही भगवान के समक्ष आ गई। इस स्थिति को देखकर भगवान मुख फेरकर खड़े हो गये। रानी ने कहा, ''बेटी की बाप से क्या लज्जा?'' भगवान के कहने पर रानी ने धर्म का स्मरण किया और उसके केश बढ़कर वस्त्र की भाँति छा गये। प्रसन्न होकर भगवान ने वरदान माँगने को कहा। रानीने आँचल फैलाकर भगवान को ही पुत्ररूप में चाहा। भगवानने कहा - ''तुमने आँचल में चाहा है, अतः गर्भ में न आकर आँचल में ही आऊँगा और देवनारायण नाम से अवतार लेकर बगड़ावतों के शत्रुओं से बैर शोधन करूँगा।'' भगवान चले गये।

भगवान ने वैकुंठ जाकर देवी भवानी से अवतार लेनेको कहा। दुर्गा ने भगवान का आदेश स्वीकार किया। भगवान से सफलता का वरदान लेकर देवी ने अपनी दासी हीरा सहित ईड़र कोट में जन्म लिया। देवी राजा की बेटी हुई और हीरा खजानची की। निःसंतान राजा को पुत्री पाकर बहुत प्रसन्नता हुई। देवी दिन दूनी और रात चौगुनी बढ़ने लगी। हीरा भी देवी के साथ पलने लगी। जब वे बड़ी हुईं तो एक दिन दोनों हाथ पकड़कर चक्कर लगा रही थीं। उनके पैरों की धमक से महल हिलने लगा। राजा समझ गया कि बेटी सयानी हो गई, अब विवाह कर देना चाहिये। तब राजा ने ब्राह्मण बुलवाये, स्वर्ण का नारियल तथा मोहरें दी तथा बेटी का टीका किसी समान स्थिति के राजकुँवर को देने की आज्ञा दी । देवी ने ब्राह्मण को भीतर बुलवाया और कहा - ''मेरा टीका किसी ऐसी व्यक्तिको देना, जो बूँली घोड़ी पर चढ़ता हो, जिसके २४ भाई हों, यदि किसी अन्य को दिया तो शाप देकर भस्म कर दूँगी। ब्राह्मण यह सुनकर चला और अनेक स्थानों पर भटकने के पश्चात गोठों में पहुँचा और सवाई भोज को टीका किया। सवाई भोज ने कहा - ''टीका का संबंध समान लोगों में होता है। हम राजा नहीं हैं,

अतः टीका नहीं लेंगे।'' नेवाजी ने कहा - ''भाई ! टीका ले लें, विवाह राणा से करायेंगे। वे अपने मित्र हैं, भाई हैं। अतः उन की ओर से टीका ले लेने में हानि नहीं है।'' नेवाजी के कहने से टीका ले लिया गया और सब भाई राणा के पास गये। कहने-सुनने पर वृद्ध राणा ने टीका ले लिया। वह बहुत प्रसन्न था। बगड़ावतों ने सब प्रबंध करने का भार स्वयं ले लिया। देवी-देवताओं एवं राजाओं को निमंत्रण भेजा गया। बगड़ावत भी जयमंगल गजमंगल हाथी तथा बूँली घोड़ी को सजाकर लाये। साथमें १४० ऊँट धन से भरे थे। उनकी सजावट देखकर राणा फीका पड़ गया। वास्तव में दूल्हे तो बगड़ावत लगते थे। तब राणा ने नेवाजी से पाँच कोस आगे चलने को कहा। वे आगे चले। ईड़र कोट की सीमा में पहुँच कर ग्रामीणों को बहुत धन दिया। बधावे के लिए आई हीरा दासी के कलश को स्वर्ण से भर दिया। ग्राम वासियों ने इन्हें ही दूल्हा समझा। तब नेवाजी ने समझाया कि वे बाराती हैं और दूल्हा तो पीछे आ रहा है। लोग आश्चर्य में पड़ गये कि जब बाराती इतना देने वाले हैं तो दूल्हा न जाने कितना देंगे? अतः बात फैलने से आसपास के ग्रामवासी धन लेने आ पहुँचे।

राणा बारात लेकर पहुँचा। बहुत भीड़ देखकर उसने नीमाजी से पूछा, ''यह क्या है?'' नीमाजी ने कहा - ''बगड़ावत अत्यधिक धन लुटा चुके हैं, इससे हमारी शोभा फीकी पड़ गई है। मैंने पहले ही कहा था - ''बगड़ावतों को मत ले चलो; आपने माना नहीं। ये लोग धन लूटने आये हैं। इतने में सामने हीरा दासी आई। बधावे के लिए बहुत बड़ा कलश लिये थी। यह विचार कर कि दूल्हा न जाने कितना देगा? राणा ने उसमें कुछ रूपये डाल दिये। हीरा सन्तुष्ट होकर चली गई। धनके लालच में आये लोगों को राणा ने बाँसों से पिटवाया। लोग भाग गये।

तोरण का समय आया, राणा हाथी पर चढ़कर तोरण मारने गया। रानी झरोखे में आई और नौहत्थी सिंहनी बनकर हाथी को डराया। हाथी भागा, राणा होदे में गिर गया, तोरण न मारा जा सका। बगड़ावतों ने देखा अपमान हुआ। यह सोचकर कि राणा भाई हैं। उनका तोरण हम मार ले तो कुछ बुरा नहीं। उन्होंने बूँली घोड़ी को उछाला और नौ गज ऊँचा तोरण जा मारा। यह देखकर आसपास के लोगों ने राजा को भड़काया और निमाजी तथा नेवाजी में युद्ध छिड़ गया। लोग भागने लगे। पीतांबर जोशी के बीच में पड़ने से संघर्ष टल गया। बारात उपवन में ठहर गई।

देवी भवानी ने हीरादासी को भेजकर सवाई भोज का खड़ग मंगवाया और पहले

उस से भाँवर ली। इस प्रकार प्रथम तोरण भी भोज ने मारा और विवाह भी भोज के खड़ग से हुआ। तब भवानी ने कहा कि अब लोग दिखावे का विवाह राणा से होगा। और दूसरे दिन विधिपूर्वक वेद पढ़ते पढ़ते ब्राह्मणों की साक्षी में रानी का विवाह राणा के साथ हुआ। राजा इड़देव सोलंकी ने बहुत से हाथी, घोड़े, स्वर्ण इत्यादि दहेज में दिये।

वृद्ध दूल्हा देखकर रानी को बहुत क्रोध आया। बारात विदा हुई और मार्ग में दो विश्राम कर बांदरवाड़ा पहुँची। वहाँ राणा ने सब को भोजन कराया और अन्य राजा अपने-अपने राज्यों की ओर चले। बगड़ावतों को भी जाते देख रानी ने हीरादासी से कहलाया कि उसका डोला बगड़ावतों के साथ चलने दिया जाय। हीरा ने रथवान से कहा, पर वह न माना, तब दुर्गा ने उसे सिंह बनकर डराया। रथवान 'सिंह' कहकर चिल्लाने लगा। सुनकर नेवाजी रथ के पास आये और हीरा से पूछने लगे, ''सिंह कहाँ है?'' हीराने कहा, ''सिंह कहाँ है ? मूर्ख रथवान यूँ ही चीख पड़ा।'' रानी ने नेवाजी से कहा कि वे उसे लेने कब आएँगे।'' रानी ने वचन माँगा। नेवाजी ने सूर्य और चन्द्रमा को साक्षी बनाकर शीश रहने तक वचन पालन करने का विश्वास दिलाया। अश्रुपूरित नयनों सहित रानी राणा के नगर की ओर चली। राणा के नगर में पहुँच कर रथ नवलखा बाग में रुकवा दिया गया और राणा से कहलवाया कि जब तक वे उसके लिए नौ खंडों का नवीन भवन न बनवा देंगे, वह नगर में प्रवेश न करेगी। राणा ने भवन कार्य प्रारंभ करवाया। तीन महीने बाद भवन लगभग तैयार ही था कि राजा ने एक किलकार लगाई और भवन गिर गया। राणाने पहरे लगाकर फिर निर्माण करवाया। तीन महिनों में नया नवखंड का भवन तैयार हुआ। रानी महल में गई। एक दिन राणा ने नई रानी के महल में जाने का विचार किया। बड़ी कठिनाई से राणा ऊपरी खंड पर तो पहुँचे, पर मूर्छित होकर गिर गये। रानी के उपचार से राणा होश में आये और रानी के साथ चौपड़ खेलने लगे। किसी प्रसंग में रानी ने राणा की कलाई पकड़ ली तो कलाई से रक्त चुने लगा। राणा डर गया। उसने हीरा को पलंग तैयार करने को कहा। यह देख रानी को क्रोध आ गया। उसने राणा को कुत्ता बनाया और हीरा को बिल्ली। रातभर कुत्ते और बिल्ली की लड़ाई करायी। प्रातः राणा को पुनः मनुष्य बना दिया। राणा दरबार में गया, उसके पीले मुख को देखकर नीमाजी ने पूछा, ''क्या, रात चैन से नहीं व्यतीत हुई ?'' राणा ने कहा, ''यह रानी नहीं, सिंहनी है।'' तब नीमाजी कालु मीर को साथ लेकर गये। मीर आगे

गया। उसने देखा वास्तव में लोह श्रृंखला में सिंहनी बंधी है। वह पीछे ही भाग गया। तब नीमाजी गये। उन्हें सिंहनी नहीं दिखाई पड़ी। रानीने देवर का भली भाँति स्वागत किया और कहा कि राणा वृद्ध था, अतः डर गया। नीमाजी ने लौटकर राणा से कहा कि रानी तो सूर्य की भाँति उज्ज्वल है और वे व्यर्थ ही दोष लगाते हैं।

रानी ने हीरा को स्वर्ण पंखी बनाकर उड़ाया। उसने जाकर रानी का संदेश-पत्र सवाई भोजसिंह की गोद में गिरा दिया। भोजने पत्र पढ़ा और घुटने के नीचे दबा लिया, पर नेवाजी की दृष्टि में वह पत्र आ गया और सवाई भोज को कहना ही पड़ा कि रानी का संदेश है। साथ ही उन्हों ने यह भी कहा कि युद्ध की आशंका है, अतः रानी को लेने नहीं जायेंगे। नेवाजी ने कहा कि सूर्य की साक्षी में वचन दिया है अतः रानी को लेने जाना ही पड़ेगा। इतना कहकर नेवाजी ने कूच का नगाड़ा बजवा दिया। रानियों को जब ज्ञात हुआ कि किसी अन्य रानी को लेने जा रहे हैं तो सवाई भोज की रानी साढूजी ने नेवाजी को बुलवाकर समझाया, पर नेवाजी न माने। साढूजी ने यह भी कहा कि उन्हों ने स्वप्न में बगड़ावतों की पत्नियों को सती होते देखा है, पर नेवाजी ने कुछ न सुना और सेना लेकर चल पड़े। नेवाजी को पत्नी नेतू ने पीछे से अपने शुक को यह संदेश लेकर भेजा कि नेतू मर गई और उसका दाह संस्कार करने आए। पर नेवाजी शुक के छल को जान गये और यह कहकर आगे बढ़ गये कि वह ही उसका दाह कर दे।

बगड़ावत राणा के नगर में पहुँचे। रानी को सगुन होने लगे। उसने हीरा को जगाया और कहा, ''बगड़ावत आ गये लगते हैं, अतः वह ऊपर चढ़कर देखे। हीराने देखा और कहा कि वास्तव में बगड़ावत आ गये हैं और नवलखे उपवन में ठहरे हैं। रानी ने हीरा को पुष्प संबंधित उत्तर लेने भेजा। हीरा गई। नेवाजी ने उसे समुचित उत्तर देकर लौटाया। रानी प्रसन्न हो गई। नेवाजी रात्रि में रानी के महल के नीचे गये। उसने कहा, ''मुझे यहाँ से ले चलो''। नेवाजी ने कहा, ''कैसे ?'' रानी ने कहा, ''वह स्वयं उपवन में आयेगी। वे प्रतीक्षा करें।'' सुनकर नेवाजी लौट गये। रानी ने राणा के पास हीरा दासी के द्वारा संदेश भिजवाया कि वह बीमार है और वह तभी ठीक होगी, जब बारह मन का शूकर और बारह मन अन्य सामग्री देवी को चढ़ाई जायेगी। साथ ही यह भी कहा कि सूकर राणा को अपने हाथ से मारकर लाना होगा। राणाने नीमा से कहा कि रात्रि के समय नगर का व्यक्ति उपवन में और उपवन का नगर में न जाने पाये। इस प्रकार रानी के महल का प्रबंध कर राणा सूकर के शिकार को गये। रानी ने अपने पसीने से बारह मन का

सूकर बनाकर राणा की सेवा में छोड़ दिया। राणा उसके पीछे चले। वह उन्हें बहुत दूर ले गया। रानी ने नगर बाहर निकलने की योजना बनाई। उसने जादू की सीढ़ी बनाई और हीरा के साथ नीचे उतरी। अंधकार में मार्ग भूलकर रानी और हीरा अन्य दिशा में निकल गई। उधर से नीमाजी की सवारी आ रही थी। उनसे छिपने के लिए रानी और हीरा एक भड़भूँजे की दुकान में घुस गई। वहाँ हड़बड़ाहट में फूंस उन पर गिरा और सूरतें काली हो गई। भड़भूँजे की स्त्री आई और उसने रानी से परिचय पूछा। रानी ने सच-सच कहा और चुप रहने के लिये उसे पांच मोहरें दी। वह चुप रही परन्तु भड़भूँजा चुप न रह सका। वह भय के मारे चिल्लाने लगा। उसकी आवाज सुनकर नीमाजी उसके द्वार पर आये। उन्हे देखकर हीरा बाहर आ गई। हीरा को वहाँ देखकर नीमाजी का तनबदन सुलग उठा। हीरा ने कहा कि यह अपनी सखी को पहुँचाने आयी थी। पर नीमाजी ने विश्वास नहीं किया और कहा कि यदि वह सत्य बोल रही है तो लोहे के तप्त गोलों को अपनी जिह्वा पर उठाकर सत्यता का प्रमाण दे। जलते गोले मंगवाये गये। गर्म लपटें निकल रही थीं। देखकर हीरा के प्राण नखों में आ गये। पर जब उसने उन पर चींटी चलते देखी तो वह देवी के प्रताप को समझ गई। और उसने जलते गोलों को हाथ में उठा लिया। नीमाजी ने सोचा कि हीरा ने गोले जिह्वा पर नहीं उठाए अतः वह असत्य बोल रही है। इसलिए सत्य की परख करने के लिए वे भीतर घुसे। उन्हें सिंह पर आरूढ़ दुर्गा दिखलाई दी। भयभीत होकर वे बाहर आ गये। हीराने कहा, ''उसकी सखी शीतला की अवतार है। प्रभावित होकर नीमाजी ने जाने का मार्ग दे दिया। रानी और हीरा नवलखा उपवन की ओर चल पड़ी। रानी के उपवन में पहुँचने पर नेवाजी ने बड़े भाई तेजा रावत से उन्हें ले चलने की आज्ञा चाही। तेजा रावत ने आसन्न युद्ध के भय से अस्वीकार कर दिया। रानी ने उसे पचास मोहरें देकर माली से द्वार खुलवा कर उपवन में प्रवेश किया। सवाई भोज और रानी का मिलन हुआ। सवाई भोज ने रानी को अपने अश्व पर बैठाया और नेवाजी ने हीरा को। पर रानी ने कहा कि जब तक उसकी श्रृंगारमंजूषा नहीं लाई जाएगी, वह नही जायेगी। नेवाजी श्रृंगारमंजूषा लेने गये और रानी का सुन्दर पलंग देखकर वहीं सो गये। विलंब होते देख सवाई भोज ने पातु कलालिन को भेजा। वह चील बनकर गई और नेवाजी को जगाकर लाई। रानी लेकर बगड़ावत चल पड़े। आमासार की बावड़ी आई। रानी ने अपनी पायल खोलकर बावड़ी में डाल दी और कहा कि अगर पायल बावड़ी में तिरे तो वह बगड़ावतों के साथ जायेगी। हनुमानजीकी

सहायता से नेवाजी ने पायल को तैरा दिया। और भी अनेक प्रकार से रानी ने बगड़ावतों के पौरुष की परीक्षा ली। बगड़ावत चलते-चलते अपने ग्राम की सीमा में पहुँचे। रानीने कहा, ''अब अश्व पर बैठकर जाना अच्छा नहीं लगेगा। पालकी आनी चाहिए।'' गोठों में घी के दीपक जलाये गये। सवाई भोज की रानी आई। उसने नवागता रानी की आरती उतारी। भाल पर केशर का तिलक लगाया। रानी महलों में गई। दीवानखाना सजाया गया। नृत्य हुए। इंद्रलोक से अप्सरायें आईं।

राणा शिकार से लौटा। रानी के महलों पर उसने कौए बैठे देखे। उसने नीमाजी से पूछा तो बतलाया कि रानी को बगड़ावत ले गये। आगे बढ़े तो राणा ने आमासर बावड़ी पर रानी की पायल देखी। उसने कहा, रानी मर गई, बगड़ावत नहीं ले गये। नीमाजी ने कहा राणा व्यर्थ चिंता करते हैं। बगड़ावत रानी को पुष्पहारवत् ले गये हैं। रानी के सूने महल देखकर राणा की आँखों में आँसू आ गये। राणा ने रानी के भवन को जलाने का आदेश दिया। ''अब चाहे अनेक विवाह हो जाये, रानी सी स्त्री नहीं मिल सकती''- राणा ने कहा। राणा ने बगड़ावतों को पत्र लिखा, ''रानी भोली है, रूठकर आपके साथ चली आयी है, गले में कीमती हार है, हीरा का ध्यान रखना।'' पत्र पाकर सवाई भोज समज गये कि बात स्पष्ट नहीं लिखी है। उत्तर दिया- ''रानी से बढ़कर हार है और हार से बढ़कर रानी। किसी भी बात की चिन्ता न करें।'' राणा ने पुनः लिखा, ''हम मृगया से लौट आये हैं। रानी का उपचार स्वयं करा लेंगे। अतः रानी को भेज दो।'' नेवाजी ने कहा, ''२४ भाइयों को मारकर ही रानी मिल सकती है।'' राणा ने सोचा बगड़ावत जैसे मित्र धरती पर कठिनाई से मिल सकते हैं। अतः उसने बगड़ावतों के गुरु रूपनाथजी को लिखा कि वे बगड़ावतों को समझाएं। पर रूपनाथजी ने भी बगड़ावतों से यही कहा कि लाई गई रानी को लौटाना मत, अन्यथा अपयश होगा। राणा ने बावन गढ़ों के राजाओं को युद्ध के लिए बुलाया। नौ लाख अस्सी हजार अश्व एकत्रित हुए। पैंतीस कोस में अश्वों की हीनहिनाहट व्याप्त हो गई। अनेक प्रकार के शस्त्रास्त्र लेकर राणा ने बगड़ावतों के राठौड़ा सरोवर की पाल पर डेरा लगाया। राणा ने पुनः बीसलदेव सोलंकी, कालु मीर, दिगोजी और बना चारण को बगड़ावतों के पिता बाघजी के पास भेजा। बाघजी के पास भी सफलता न मिली तो वे बगड़ावतों के अगूज तेजा रावत के पास गये। वहाँ भी कुछ न हुआ। बीसलदेव नेवाजी के पास भी गये, पर निराश लौटना पड़ा।

राणा अपनी समस्त सेना लेकर बाघजी पर चढ़े। बाघजी ने भयंकर युद्ध किया। अनेक शत्रुओं को धराशायी कर बाघजी वीरगति को प्राप्त हुए। बगड़ावतों को पिता की मृत्यु का समाचार मिला, वे भी अपनी सेना सजाकर चले। भवानी ने देखा कि सम्मिलित बगड़ावतों को तो काल भी नहीं हरा सकता, अतः उसने बगड़ावतों को एक- एक कर युद्ध में जाने को कहा। नेवाजी अपने महलों में गये और छः महीने की निद्रा में मग्न हो गये। छोटे भाई आल्हाजी हजार अश्वों की सेना लेकर युद्ध में गये। उन्होंने राणा की सेना में विनाश का ताण्डव मचा दिया। तब दुर्गा ने अदृश्य रहकर आल्हा का मस्तक काट लिया। इसके उपरांत राणा की सेना आकड़साड़ा की ओर चली। वहाँ सवाई भोज के पुत्र जसा और महशवण ने युद्ध किया और मृत्यु की गोद में सो गये। सवाई भोज की पुत्री दीपकुँवर ने भी घमासान युद्ध किया। देवी ने इस समय चार देह धारण की थीं। एक देह से वह सवाई भोज के साथ चौपड़ खेल रही थी। दूसरी देह से अन्य रानियों के साथ वार्तालाप करती थी। तृतीय से सेना को उत्साहित करती थी और चतुर्थ नेवाजी को जगाने का प्रयत्न करती थी। देवीने अनेक प्रयत्न किये, परन्तु नेवाजी न जागे, तब वह नेवाजी की माता के पास गई और कहा कि उनका पुत्र कायर है। माताने सूर्य की ओर देखकर कहा कि जब तक सूर्य अपने पथ से विचलित नहीं होता, उनका पुत्र कायर नहीं हो सकता। माता ने जाकर पुत्र के शयनकक्ष के द्वार से ही अपने स्तन की धार नेवाजी के मुख पर मारी। दूध नेवाजी के मुख में पड़ा। उनकी निद्रा तुरंत टूट गई। माता ने कहा - ''पुत्र, गायें प्यासी मर रही हैं, राणा ने मार्ग रोक रखा है।'' नेवाजी यह कहकर कि ''जब वे युद्ध करेंगे महाकाल आ जायेगा। देवता भी आकाश में युद्ध देखेंगे'', पुनः सो गये। नेवाजी की माता तब अपनी पुत्रवधू नेतु के पास गई और नेवाजी को जगाने को कहा। नेतु पति के भवन की ओर जा रही थी, कि मार्ग में उनके पुत्र मिल गये। उन्होंने कहा - ''पिताजी को आराम करने दिया जाय, युद्ध करने वे जाएंगे।'' भयंकर युद्ध करने के बाद नेवाजी के पुत्र भी देवी की मुंड़माल के मनके बन गए। विलाप करती माता जल का कलश लेकर पति को जगाने चली। देवीने कुरज पक्षी का रूप धारण किया और समुद्र पार जाकर अन्य कुरजों को माँसभक्षण के लिए बुला लाई। अस्सी हजार कुरजें आई और वन का प्रत्येक वृक्ष उनसे छा गया। नेवाजी जगे और चंदन की चौकी पर बैठ गये। कुरजों की कुरलाहट सुनकर सोचने लगे कि यह लाल मुख और लम्बी ग्रीवावाली समुद्र पार की कुरजें यहाँ कहाँ से आ गई ? इन्होंने

कुरज से ही पूछा, तब कुरज ने कहा - ''एक दिन चाँद और सूरज एक साथ उदित हुए, वे परस्पर इस युद्ध की चर्चा कर रहे थे। उसी चर्चा को सुनकर हम माँसभक्षण हेतु आईं हैं।''

नेवाजी ने दरबार बुलाया। सभी सरदारों को युद्ध हेतु प्रस्तुत होने को कहा। सबने स्नान किया और युद्ध के लिये इस प्रकार सजने लगे जैसे बारात में जाने का प्रबंध कर रहे हों। तोपों की सलामी दी गई। युद्ध की तोपें सुनकर नेवाजी के अश्व को युद्ध का उत्साह चढ़ा और भारी उत्साह के धरती में घुस गया। नेवाजी अश्वशाला में गये, पर अश्व न दिखलाई पड़ा। बहुत देखने पर उसके कान दिखलाई पड़े तब नेवाजी ने उसे पकड़ कर निकाला। अश्व ने कहा, ''वीरवर, युद्ध में चलो। हाथी के मस्तक पर पैर जमा दूँगा और तुम शत्रु को छेद देना।'' नेतुजी ने नेवाजी की आरती की और पुष्पमाला न पहनाई। उससे क्रोधित होकर अश्व ने शाप दिया। नेवाजी सेना लेकर चले। जब वे माता के महल के नीचे से जा रहे थे, तो माता ने आज्ञा दी कि अगृज सवाई भोज से मिलकर जाये। अतः नेवाजी भाई से मिलने गये, उनके नेत्र भर आये। सवाई भोज ने नेवाजी से कहकर अपने पुत्रों को छोछुभाट की संरक्षता में रखवाया। युद्ध का नगाड़ा बजने लगा और नेवाजी अपने गुरु रूपनाथजी की सेवा में गये। बाबा रूपनाथजी ने कहा - ''पुत्र, सवा प्रहर युद्ध करना, चाहे दिन में चार बार करना, पर एक समय में सवा प्रहर से अधिक नहीं।'' नेवाजी ने कहा, ''युद्धभूमि और बाबजी की धुनी के स्थान में बहुत अंतर है, यदि आते समय सुरातन को धुत लग गई तो क्या होगा ?'' यह सुनकर बाबा रूपनाथजी सात-सौ चेलों को लेकर युद्धभूमि के समीप ही नौ गढ़ी में आकर बैठ गये। गुरु रूपनाथजी से आज्ञा लेकर नेवाजी युद्धभूमि में गये। राणा की सेना में महानाश का दृश्य उपस्थित हो गया। रक्त का प्रवाह बह निकला। चंद्रसिंह सरदार को नेवाजी ने धराशायी कर दिया। सवा प्रहर युद्ध करके नेवाजी गुरु के पास लौट आये। रूपनाथजी ने अमृतयुक्त जल नेवाजी को पिलाया। इससे उनके हृदय का दाह शीतल हो गया। पवित्र भस्म के स्पर्श से उनका शरीर क्षतिमुक्त हो गया। अश्व भी स्वस्थ हो गया। इस प्रकार नेवाजी छः महीने तक राणा की सेना का संहार करते रहे, वह स्वयं गुरु की कृपा से अक्षत ही रहे। देवी ने सोचा नेवाजी के अक्षत रहने में भेद और होना चाहिए। देवी ने नेवाजी की रानी नेतु से मिलकर रूपनाथजी के अमृतयुक्त जल और भस्म का भेद जान लिया और एक दिन नीली बिल्ली बनकर देवी ने छल से इन वस्तुओं का हरण कर

लिया। नेवाजी से रूपनाथ बाबा ने कहा कि उन्होंने किसी को भेद दे दिया है। अब करनी का फल पाना ही होगा। नेवाजी की प्रार्थना से गुरु प्रसन्न हुए और नेवाजी के शरीर को चीरकर उसमें संजीवनी बुटी रखनी चाही। नेवाजी ने कहा, ''गुरुजी, त्वचा क्यों बिगाड़ते हो ?'' गुरुजी समझ गये कि नेवाजी ने संजीवनी को पगड़ी में रख लिया। मार्ग में रानी मिली। नेवाजी ने संजीवनी का भेद न केवल बतलाया वरन् हाथ पर रखकर बुटी भी दिखाई। रानी ने चील रूप में झपटकर बुटी ले ली। नेवाजी को दुःख हुआ कि अब गुरु का उपालंभ मिलेगा। रानी ने तब उनके जीव को पायल में रखकर पायल पैर में बाँध दी। नेवाजी महल में गये। उधर अन्य रूप धारण कर देवी ने पायल का भेद राणा की सेना के दो योद्धा साण और भाण को बता दिया। इन भाइयों ने नेवाजी को मारने का बीड़ा उठाया। दोनों भाई युद्ध में गये। नेवाजी के सामने आने पर उन्होंने कहा- ''नेवाजी, तुम क्या लड़ रहे हो ? यह तो पायल लड़ रही है !'' व्यंग्य सुनकर नेवाजी ने पायल खोलकर फेंक दी और एक हाथ में साया तथा भाया को ठिकाने लगा दिया।

पायल फेंकने से देवी को क्रोध आ गया। उसने अपने चक्र से नेवाजी का मस्तक काट लिया। मस्तक कटते ही वीर नेवाजी के मस्तक के स्थान पर कमल का पुष्प आ गया। वक्ष में आँखें निकल आई। वे मस्तक बिना ही युद्ध करने लगे। चंद्र और सूर्य यह युद्ध देखने लगे। मेघमाला सहित इन्द्र भी यह युद्ध देखने आया। इस प्रकार छः महीने युद्ध होता रहा। तब देवी ने पर्वत पर चढ़कर नील की छाया नेवाजी पर डाली। इस से नेवाजी का शुरातन उतर गया और वे युद्ध में गिर गये। नेवाजी की रानी ने सत किया। उन्हों ने पेट चीरकर गर्भस्थ शिशु को बाहर निकाला और रूपनाथजी को सौंप दिया। चिता पर बैठकर नेतूजी ने रानी को कोढ़िन होने का शाप दिया और कहा कि कमल के पुष्प में अवतार लेकर देवनारायण बगड़ावतों का वैर शोधन करेंगे। अपने रक्त से सब वृतान्त लिखकर उसने अपने ज्येष्ठ सवाई भोज को भेजा। भोज युद्ध में जाने लगे तो रानी ने कहा- ''मैं भी चलूँगी। पर शर्त यह है कि आप पीछे मुड़कर नहीं देखेंगे। यदि देखा तो मस्तक काट लूँगी।'' सवाई भोज ने शर्त स्वीकार कर ली। युद्ध में राणा ने तलवार उठाई। रानी ने हाथ आगे कर दिया। स्वर्ण की चूड़ी कट गई। यह देख सवाई भोज शर्त भूल गये और मुड़ कर देखा तो रानी ने तुरंत चक्र से मस्तक काट लिया और अपने वास्तविक दुर्गा रूप में मुंडमाल धारण कर वटवृक्ष पर जाकर बैठ गई। वृक्ष पर

बैठी दुर्गा देखकर राणा चकित रह गया। तेजा रावत भाग गया।

नियोजी, निमोजी, बहरावजी, बागोरजी, नेतोजी, अदनजी, बदनजी, मदनजी, रूपाजी, भुड़ोजी, मांगोजी, भोजोजी, उदोजी, भुणोजी, जयभालजी, भोवनजी, नानुजी, जयपालजी, तेलोजी, खोलोजी, हरजी, तथा जोरजी ये बाईस भाई भी युद्ध में वीरगति प्राप्त हुए। बगड़ावतों की मृत्यु और पराजय को देखकर स्वयं दुर्गा (जयमति) प्रसन्न हो गई। गोठों में सवाई भोज के छप्पन करोड़ खजाने को राणा के लोगों ने लूट लिया। साढूजी सती होने को निकली। किन्तु भगवान ब्राह्मणरूप में प्रकट हुए और साढूजी को कहा कि त्रिभुवननाथ कमल के फूलों में जन्म लेंगे। और वे बारह बरस के होने पर भोज और उनके भाइयों का बैर लेंगे। समय व्यतीत होने पर भगवान का जन्म हुआ। ब्राह्मणों ने बालक का नाम देवनारायण रखा। देवनारायण ननिहाल में बड़े हुए। बारह वर्ष के होने पर राणा से बदला लेने के लिये उस पर चढाई की। राणा का सिर काट कर उसे अपने बाप तथा काकाओं के देवरे पर चढ़ाया। राणा की धरती उजड़ गई और वहाँ कोई पानी पिलानेवाला भी नहीं रहा।

गुजरांनो अरेलो की कथनशैली और संक्षिप्त कथा

गुजरांनो अरेलो की कथनशैली

दीपावली के दिनों में दौड़ते-दौड़ते जो गाथाएँ गाई जाती हैं, उनको डुंगरी भील आदिवासी 'अरेला' कहते हैं। अरेला गानेवाला एक प्रमुख गायक होता है। उसको 'अरेला गायक' कहते हैं। गाने में जो सहायक होते हैं उनको 'रागिया' कहते हैं। प्रमुख गायक को जो गाने का पोरस चढ़ाता है उसको 'उंकारियो' कहते हैं, श्रोताओं को 'होपळनारा' (सुननेवाला) कहते हैं। दीपावली के महोत्सव का उल्लासजनक वातावरण होने के नाते प्रमुख गायक के घर अनेक लोग इकट्ठे होते हैं। आम तौर पर अरेलो गाने में प्रमुख गायक को पुरुषवर्ग सहायक होता है, जब कि स्त्रियाँ नृत्य करने में साथ देती हैं।

प्रारंभ में लोकसमुदाय के सन्मुख अरेला गायक सीमदेवी-देवता और गोत्रदेव - देवियों के नाम का दीपक जलाता है। वह देव-देवियों का स्मरण करके श्रीफल का नैवेद्य चढ़ाता है। इकट्ठे लोकसमुदाय को श्रीफल का प्रसाद बाँटा जाता है। इस प्रकार की विशिष्ट धार्मिक विधि से लोकसमुदाय अरेला के प्रसंग सुनने के लिए आतुर हो जाता है।

रागिये मुख्य गायक को साथ देने के लिए एक स्थान पर समूह में बैठ जाते हैं तब अरेला गायक दोनों हाथ की तर्जनी कानों में डाल के स्मरण के साथ अरेला गाने का प्रारंभ करता हुआ गाता है ए.. रा..... हे.. । याने कि जो लोग अरेला गाने या सुनने के लिए आये नहीं वे आनंद से वंचित रह गये। मृतक अमूल्य हो गये। गायक जिंदा लोग को 'किल्लोल' करने के लिए पुकारता है। फिर उसके चरण स्फूर्ति से गतिशील होते हैं। वह गाता हुआ रागियों से विरुद्ध दिशा में जाता है और फिर त्वरा से मुड़कर दौड़ता हुआ रागियों के पास आता है और अरेला की आधी पंक्ति बीच में से छोड़ देता है। रागिये उस आधे चरण का अनुसंधान करके दीर्घ लय में गाने लगते हैं। रागिये अंतिम चरण गाने लगते हैं तब प्रमुख गायक गाने के कार्य से बहुत-थोड़ा विराम प्राप्त करता है। जैसे रागिये गाना बंद करते हैं, तब अरेला गायक पुनः आगे आनेवाले कथांश को आगे गाता हुआ रागियों से विमुख होकर विरुद्ध दिशा में जाने लगता है। इस समय रागिये

आतुर होकर कथा सुनने का आनंद लेते हैं और उंकारियो ''अंब्बे''... ''सवा हो''... ''ओवे पाई ओवे...'' आदि प्रमुख गायक को धन्यवाद देते और उसकी कथन कला का सामाजिक गौरव प्रदान करते वाक्यांश बोलता है। अतः गायक कथा गाने के लिए ज्यादा उत्साहित होता है और उसे कथा गाने का 'शूरातन' चढ़ता है। परिणामतः वह अरेला के प्रसंगों को नाट्यात्मक ढंग से प्रस्तुत करता है और श्रोता-दर्शकों को कथा के रस में सराबोर करके रसनिमग्न करता है।

गीत और नृत्य से सभर 'झरमरियां' गुजरां नो अरेलो के उत्तरार्ध में आते हैं। फिर भी श्रोतावर्ग गीत गाने और नृत्य करने के लिए सारी रात बैठे रहते हैं और धार्मिक श्रद्धा से गाथा के चरित्रों के साथ तादात्म्य स्थापित करके कथा सुनते हैं। जब गायक झरमरियां गाने का प्रारंभ करता है तब गाने और नाचने के लिए आतुर स्त्री-पुरुष उत्साह और उल्लास के साथ अरेला गायक को गाने और नाचने में सहायक होते हैं। स्त्रियाँ नृत्य करती हैं, जब पुरुष गुजरांनो अरेलो के प्रसंग के भाव मुताबिक बंसी और 'घोड़ालियुं' बजाते हैं। अतः गीत, नृत्य और कथा का प्रभाव बढ़ जाता है और जनसमुदाय तन्मय होकर सारी रात गुजरांनो अरेलो की कथा का रस लूटता है।

गुजरांनो अरेलो की संक्षिप्त कथा

हरिओम

कादव के पुत्र जादव हुए, और जादव के हरिओम। हरिओम के पुत्र बाघजी हुए, और बाघजी के चौबीस गुजोर हुए।

हरिओम मंड़ोवरा देश के राजा थे। एक रात शिकार की देवी आयरण हरिओम के स्वप्न में आकर अपने भाइयों के साथ मेर-सिमेर(मेरु-सुमेरु) पर्वत पर शिकार पर जाने का आदेश देती है। दूसरे दिन प्रातःकाल हरिओम अपने भाइयों के साथ मेर-सिमेर पर्वत पर शिकार खेलने जाते हैं। हरिओम सभी भाइयों को आदेश देते हैं, ''आप सभी प्राणियों को एक स्थान पर एकत्रित करने के लिए किलकारी लगाओ। मैं सारे प्राणियों को गीच जंगल में से बाहर निकालने वाली अगली घाटी पर जाता हूँ।'' उसके भाई जोर जोर से किलकारी लगाते हैं। घाटी के एक स्थान पर एक साँभर सूर्य के सामने देखते हुए एक पाँव पर तप कर रहा है। झाड़ी के पीछे से हरिओम साँभर को मारने के लिए कभी हाथ को सिंदूरी भाले पर डालता है तो कभी तलवार पर। किन्तु सूर्य के आराधक सांभर को मारने का विचार छोड़ देता है। वह साँभर के पास जाकर उसके

शरीर पर हाथ रखकर उसे स्नेह करता है। स्नेह करते करते साँभर के कान की टीशी और पूँछ के पद्‌म को काट कर संकेत रूप में ढाल की गादी के पीछे छिपा देता है। 'किलकार' के साथ दौड़े आते हुए प्रत्येक प्राणियों को मारने के बजाय उसके कान के अगृभाग को काटकर छोड़ देता है। किलकारी दे-देकर थके हुए भाई हरिओम के पास जाते हैं और कितने प्राणियों का शिकार किया यह पूछते हैं। हरिओम कहते हैं- ''यहाँ तो एक भी प्राणी या पक्षी आया नहीं है, न जाने सारे जानवर किस दिशा में चले गये? यहाँ तो किसी भी प्राणी का या पक्षी का चिह्न भी दिखाई दिया नहीं है।'' थकान और प्यास के कारण सारे भाई झरने का ठंड़ा पानी पीकर अशोक वृक्ष की छाया में बैठते हैं। हरे और पीले रंग के बिछावन पर बैठे ये भाई आपस में बातें कर रहे हैं, ''हम लोक पूरे दिन घूम घूमकर थक गये, तथापि एक भी प्राणी शिकार में नहीं मिला। अब कौन सी खुशी में अमल कसुंबा पीयेंगे।'' इतने में तो हरिओम ढाल की गादी में से जानवर के कान के अगृभाग को बिछावन पर डालता है। भूख के कारण गुस्से में आकर सभी भाई एक साथ हरिओम पर टूट पड़ते हैं, और उनकी दोनों आँखे फोड़ डालते हैं। राजा को अंध बनाकर बन में अकेला छोड़कर अशोक वृक्ष की छाया से निकलकर आवेश में मंड़ोवरा नगर में चले जाते हैं।

छोटे देवर से पति अंध होने की खबर सुनकर किरोतरा देश की राजकुमारी रखमा राठोड़िन 'फुलबछेरा' घोड़े पर सवार होकर वनप्रदेश में आती है। घोड़े पर से नीचे उतरकर राजा का सिर गोद में लेकर देखती है, तो पति दोनों आँखें खो चुके हैं। रोते कलपते हुए कहती है, ''दुश्मनों तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था!'' ठीक इसी समय वासुकि नाग गरुड़ पक्षी के बच्चे खाने को अशोक के पेड़ पर चढ़ता है। राणी हरिओम के हाथ में खड़ग देकर शिकार का निशाना बताती है। नाग के दो टुकड़े होकर धरती पर गिरते हैं।

पेड़ पर घोंसले में बैठे हुए गरुड़ पक्षी के बच्चे सोचते हैं, ''नाग न जाने हमारे कितने भाई-बहनों को खा गया होगा? हम इस अंध व्यक्ति के कारण ही बच गये। अब तो माँ अंधे को दृष्टि दे तभी हम खाना खायेंगे। रात जब गरुड़ पक्षिणी समुद्र से खाना लेकर घोंसले में वापस लौटती है तब बच्चे वासुकि नाग की बात बताते हैं। बच्चों की बात सुनकर माता हर्षित हो उठती है और उपाय बताती हुई कहती है, ''घोंसले में से बारह बच्चों की चीरक झाड़ती हूँ। काले सर का मनुष्य इस चीरक को झेलकर सूक्ष्म पीसकर आँखों में डाले तो उसकी आँखें तारे जैसी तेजस्वी होंगी।''

पक्षी की भाषा को समझनेवाली रखमा राठोड़िन चीरक झेलकर उसे पीसकर आँखों पर बाँध देती है और इस तरह राजा को नेत्रज्योति पुनः प्राप्त होती है।

भाइयों के वर्तन से दुःखी होकर राजा हरिओम रानी को राजधानी में भेजकर उजोर नगरी में जाता है। राजा को प्यास लगती है। राजा एक कुम्हारिन के घर जा पहुँचता है। राजा को पानी देते समय कुम्हारिन का एक आँसू पानी के कटोरे में गिरता है। राजा कहता है, ''मुझे ऐसे दुःख का पानी नहीं चाहिए। तुम क्यों रोती हो ? तुम्हारे दुःख का कारण बताओ।'' कुम्हारिन कहती है, ''सरदार मैं तो इसलिए रोती हूँ कि मेरे छः बेटे थे, और सातवाँ उनका बाप था। ये सब फेरे में पूरे हुए। इस नगरी में एक बाघ नित्यकृम से आता था और हररोज बहुत सारे लोगों को खा जाता था। इसीलिए नगरी के राजा ने निश्चय किया कि हररोज एक व्यक्ति बाघ के भोजन-शिकार के लिए तैयार रहेगा। आज मेरे अंतिम बेटे की बारी है।'' हरिओम कहता है, ''बहन, तू मत रो ! तेरे बेटे की जगह बाघ के पास मैं जाऊँगा। तू दूसरा पानी ले आ।'' राजा पानी पीकर बाघ को मारने की योजना बनाता है।

सवा पाँच सेर हरे मूँग, काले उड़द और लाल गेहूँ का आटा मिलाकर एक मानव पुतला बनाकर उस पर श्वेत और लाल कपड़ा रखता है।

हरिओम मानव का पुतला लेकर बाघ के प्रवेशद्वार की जगह पर जाता है। प्रवेशद्वार के पास गढ़ा खोदकर उस में आटे की पुतली खड़ी रखता है और पास के कुंड में आधा मन शराब डालता है। तत् पश्चात राजा पुतले के पीछे छिपकर बाघ के आगमन की प्रतीक्षा करता है।

शाम हुई। मेरु सुमेरु की ओर से बाघ नगर की ओर आ रहा है। बाघ की दहाड़ से पक्षी डरे हुए हैं। बाघ आकर कुंड में शराब पीता है और 'हाउ-हाउ' करके आटे के मानव पुतले पर टूट पड़ता है। शराब के कारण बाघ बेहोश होकर लड़खड़ाने लगता है। इतने में ही पुतले के पीछे छिपा हरिओम हाथ में 'विजीहण खड़ग' लेकर बाहर आता है। खड़ग के एक ही झटके से बाघ जमीन पर गिर पड़ता है। खून की धारा बहती है। हरिओम बाघ के कान के अगृभाग और पूँछ काटकर ढाल की गादी के नीचे छिपा देता है।

नभोमंड़ल में शाम व्याप्त हुई है। हरिओम तत्पश्चात् मध्यरात्रि को खड़ग साफ करने हेतु झांझर बावड़ी में जाता है। बेला वेवारिया की कुँवरी इलोर-किलोर बावड़ी के पास रेशम के झूले पर झूल रही है। बावड़ी में उतरते हुए पुरुष को देखकर कहती है,

''मध्यरात्रि को कौन झांझर बावड़ी के नीर दूषित कर रहा है ?'' राजा कहता है, ''मैं मंड़ोवरा देश का राजा हरिओम हूँ।'' कुँवरी कहती है, ''बचपन से ही मैं तुम्हारे लिये चावल का हार बना रही थी। कोरे कागज पूजती थी। किन्तु हे राजा! तुमने ऐसे कौन से पराक्रम किये हैं कि तुम्हें इस मध्यरात्रि को बावड़ी तक आना पड़ा।'' राजाने उत्तर दिया, ''उजोर नगर के भयंकर शिकारीबाघ को मारकर विझीहण खड़ग साफ करने हेतु यहाँ आया हूँ।'' हरिओम बावड़ी के जल में खड़ग साफ करता है। खड़ग पर चंद्र की किरनें पड़ती हैं। उससे 'झणुका' (प्रकाश की चमक) होता है और इलोर-किलोर कुँवरी के उदर में प्रविष्ट होता है। कुँवरी के उदर में गर्भ रहता है। इलोर-किलोर का मन रीझता है। वह कहती है, ''राजा, तुम्हें बाघ मारने के पुरस्कार में राजगादी दे तो इन्कार कर देना। तुम मुझे माँग लेना। मैं तुम्हारा घर बसाऊँगी।''

सुनहरा प्रभात होने पर पाया जाता है कि पर्वतराज आबू के शिखर का सा महाकाय बाघ नगर के द्वार पर मरा हुआ पड़ा है। राजा के दास-खवास कचहरी में बाघ मारने का दावा करते हैं। लेकिन वह बाघ मारने की सच्ची निशानी नहीं दे सकते। अंत में उजोर नगरी का राजा बाघ के शिकार करनेवाले हरिओम को ढूँढ़ निकालता है। हरिओम राज दरबार में चतुराई एवम् गौरवपूर्वक बाघ के शिकार की कहानी क्रमशः राजा को सुनाता है और प्रमाणरूप में कान के अग्रभाग और पूँछ राजा को दिखाता है। हर्षित राजा उसे राजगादी देने को तैयार होता है। लेकिन राजा झांझर बावड़ी के रेशम झूले पर झूलती इलोर-किलोर से विवाह करने की इच्छा व्यक्त करता है।

सुहावने बाजे बज रहे हैं। उजोर नगरी का राजा हरिओम के साथ इलोर-किलोर का विवाह रचाता है और कन्यादान के रूप में आधी राजगद्दी देता है। दोनों भली भाँति उजोर नगरी का शासन करते हैं।

बाघजी

इलोर-किलोर के उदर में तेजकिरण से रहा गर्भ धीरे-धीरे विकसित होता है और नौ महीने और नौ दिन के बाद कुँवर का जन्म होता है। खुशी का वातावरण फैल गया है। दाई कुँवर को नहलाकर राणी को देती है। कुँवर आधे बाघ और आधे मनुष्य का स्वरूप धारण किये हुए है। जोशी हरिओम के कुँवर का नाम बाघजी रखते हैं।

बाघजी कुँवर दिन दूना और रात चौगुना बड़ा होता है। बिना कामकाज के फुरसत में बाघजी बढ़ियासा झूला बनाने की सोचता है। सुंदर छोटे-छोटे घुँघरु और आकर्षक

रंगोंवाला झूला लेकर बाघजी सरोवर तट पर आता है। सरोवर तट पर झूला बाँधकर झूला झूलता है। मरुए की गेंडुरी पर काँच का घड़ा लेकर प्रत्येक जाति की लड़कियों का वृन्द पानी भरने आता है। झूले की मधुर कर्णप्रिय आवाज से आकर्षित होकर नगर की लड़कियाँ बाघजी से कहती हैं, ''हम को भी झूला झूलाओ।'' बाघजी कहता है, ''यह झूला तो अभी कँवारा है। उसका विवाह होने के बाद ही उसके उपर झूला जा सकता है।''

खांड़ा सरोवर के तट पर ब्राह्मण विवाहमंडप तैयार कर रहा है। नगर की किशोरियाँ और बाघजी मदनफल बाँधते हैं। बाघजी और युवतियाँ झूले के चारों ओर पाँच फेरे फिरते हैं। इसी तरह वह झूले के साथ लड़कियों की बाघजी से भी शादी हो जाती है। वे बाघजी के साथ झूला झूलती हैं। झूलते झूले की ऊँचाई के साथ गुजरात और राजस्थान देखती हैं। इस तरह डोलरिया (झूला) का विवाह कराके उजोर नगरी की किशोरियाँ अपने घर जाती हैं।

वयस्क होने पर उन किशोरियों के माता-पिता उनके विवाह के मुहूर्त निकालने लगे, पर शादी का मुहूर्त आता नहीं। तब माता-पिता ने युवतियों से पूछा। युवतियों ने सारी घटना बता दी। सब लोग बाघजी के पास गये और कहने लगे, ''ये युवतियाँ तुम्हें सौंप दी जाती हैं।''

दिन गिनते, बरस गुजरने लगे। किन्तु अभी तक बाघजी के कोई संतान नहीं। निःसंतान बाघजी मन में सोचता है, ''मुझे छः और छव्वीस रानियाँ हैं, फिर भी में निःसंतान हूँ।

बाघजी की पुत्र प्राप्त करने की प्रबल इच्छा के कारण वैकुंठ में स्वर्ण का सिंहासन हिलने लगा। आगे घटित होनेवाले प्रसंगों के बारे में सोचकर भगवान संतान देने की भावना से बाघजी के हाथ में दो आम रखकर कहते हैं, ''इस आम के टुकड़े टुकड़े करके सभी रानियों को खिलाना। मेरे आशीर्वाद हैं कि तुझे छः और छव्वीस कुँवर प्राप्त होंगे।''

जाते-जाते भगवान बाघजी को गरिओर कोट में जाने को कहते हैं। बाघजी छः और छव्वीस रानियों को आम बाँट देता है।

प्रातःकाल में ही बाघजी गरीओरकोट में चला आता है। रानियों को नौ महीने और नौ दिन के बाद छः और छव्वीस कुँवर पैदा होते हैं। दाई स्वर्ण छुरी से नाभि तंतु काटती है और कुँवरों को नहलाकर रानियों की गोद में देती है।

ब्राह्मण वेश में भगवान पोथी देखकर बाघजी के पुत्रों के नाम रखते हैं। ब्राह्मण कहता है, ''पहला नाम 'मेहो', दूसरे का नाम 'भोजो'। उसके बाद 'एमजी' और 'खेमजी'।'' अंत में ब्राह्मण 'हखलो' नाम रखता है। बाघजी के छः और छव्वीस पुत्र रेशम के झूले-झूलते हैं, और दिन रात बड़े होते हैं।

गरीओरकोट में बाघजी के मेहो, भोजो, ऐमजी, खेमजी, ढागजी, ढूबजी आदि छः और छव्वीस बेटे हैं। सभी भाइयों में मेहो बड़ा और उसके बाद का भोजो है। जीवनयापन के लिए सभी गुजोर मेर-सिमेर पर्वत पर जाते हैं। वहाँ से घास लाकर नगर में बेचते हैं। पाताल खंड में बसती सालोर देवी अपना पालन कर सके ऐसे मालिक ढूँढ़ने के लिए मेर-सिमेर पर्वत पर आती है।

पर्वत पर घास काटते गुजोर को देखकर सालोर देवी बुढ़िया का वेश धारण करके सर पर खट्टी छाश का पात्र रखती है। रास्ते में बुढ़िया को मेहो और भोजो मिलते हैं। बर्तन पर मक्खिओं का झुंड देखकर भोजा कहता है, ''माताजी, सर पे रखे पात्र में क्या लेकर जा रही हो ?'' ''सरदार, है तो छाश लेकिन पीने योग्य नहीं है। छाश में मक्खियाँ पड़ी हैं, और छाश बहुत खट्टी है।'' भोजा छाश देखकर माथे पर तिलक करके मूँछे ठीक करके सारी छाश पी जाता है। सालोर सोचती है, यह गुजोर तो बहुत सहनशील है। ये हमें अवश्य संभालेंगे। प्रगट होकर कहती है, ''बाघजी के वीर पुत्र, मैं पाताल की सालोर देवी हूँ। मैं तुम पर युगों तक प्रसन्न हुई हूँ। आज से तुम्हारा घास बेचना बंद। शनिवार शाम हम तुम्हारे घर आयेंगी। हमारे रहने की सुविधा कर लेना।'' इतना कहकर देवी सालोर अदृश्य हो जाती है।

दिन पश्चिम की ओर ढला है। पंछी अपने सुहावने घोंसले की ओर जा रहे हैं। चाँदी के खुरवाला साँड़ सूरज आगे है। खुर के घर्षण के कारण सिंदूरवर्णी आग उठती है। नवलाख गायों का झुंड़ गरीओरकोट में आ रहा है। भोजा की माता सादु खटियाणी गायों के स्वागत के लिए थाली में चावल और दीया जलाती है। गायों का स्वागत करके तिलक करके कहती है, ''हे माता ! तू हमारे लिये ही आयी है।''

पाताल से गायों के साथ आया हुआ नापु ग्वाला कांबरिया का चाबुक और कुल्हाड़ी लेकर नवलाख गायों के झुंड़ को जलाशय के किनारे, डोड़िया बरु चराता है।

गायों के आगमन से समृद्ध बने हुए गुजरों को रात-दिन का भी पता नहीं चलता। वे खा-पीकर मौज उड़ाते हैं।

अब वैकुंठ में स्वर्ण का सिंहासन डोलने लगा है। पृथ्वी पर कोई विचित्र घटना

घटित हुई है। देरावट नगरी का सपुनाथ स्वामी खाखर बन में आकर बछड़े का रूप धारण करके गायों का दूध पी जाता है। बिना दूध के नवलाख गायों के बछड़े मर रहे हैं। सोने के झाड़ू से आँगन बुहारती हुई माता अपने बेटों से कहती है, ''बच्चों, मेरी बात सुनो ! हरेक गाय को दुहती तब बारह घड़े दूध हम पीते थे और तेरहवाँ घड़ा बछड़े के लिये छोड़ती थी। अब गायों का दूध आता नहीं है। अतः बछड़े मर रहे हैं। खाखर खेड़े में कोई ऐसा शिरजोर पैदा हुआ है, जो हररोज सभी गायों का दूध पी जाता है। मेरी कोख से पत्थर पैदा हुए हैं।'' माता के बचन भोजा को कडुए लगते हैं। वह कहता है, ''अब देखना इस मर्द का खेल।''

सपुनाथ

भोजा कंधे पर कुल्हाड़ी रखकर खाखर-खेडों में जाता है। बछड़े के वेश में दूध पीते सपुनाथ के निकट जाकर उस पर टूट पड़ता है। दोनों के बीच द्वंद्वयुद्ध होता है। भोजा पूछता है, ''तू मेरी गायों का दूध क्यों पी जाता है ?'' तब सपुनाथ कहता है, ''भोजा सालोर तो मेरी थी, इसीलिए मैं दूध पीता था। जब तेरा बाप निःसंतान था, तब मैंने उसे पुत्र दिये थे। उस समय तेरे बाप ने एक पुत्र मेरी सेवा के लिये दिया था। लेकिन अभी तक तुम में से कोई भी मेरी सेवा के लिए उपस्थित नहीं हुआ।अतः मैं सालोर का दूध पी जाता हूँ।'' भोजा कहता है, ''सपुनाथ, मुझे गरीओरकोट में जाने दे। मेरे भाइयों को मिलकर वापस आऊँगा।''

भोजा भाइयों से विदा लेकर भग्नहृदय खाखर खेड़ों में आता है। सपुनाथ और भोजा सपुनाथ की देरावटनगरी में जाते हैं। देरावटनगरी में भोजा को सपुनाथ की धूनी की सेवा करते करते बारह वर्ष पूरे होने आये हैं। अब सपुनाथ कहता है, ''बेटे, मैं तुम्हें धूनी के इर्द-गिर्द घूमते हुए पढ़ाना चाहता हूँ। मैं तेरे लिये बारह घानी का तेल लेने जाता हूँ। तू तेल को गरमाने के लिए लकड़ी इकट्ठा करके रखना। किन्तु बेटे धूनी के बंद कमरे को खोलना मत।''

सपुनाथ के जाने के पश्चात् भोजा ताले की चाबी हाथ में लेकर पहले बंद कमरे को खोल कर देखता है तो रस्सी से बंधे मानव मुण्ड लटक रहे हैं। मुण्डों को देखकर भोजा हँसता है। प्रत्युत्तर में मुण्ड भी भोजा के सामने अट्टहास्य करते हैं। आश्चर्यचकित भोजा मुण्ड से पूछता है, ''तुम क्यों हँसते हो ?'' मुण्ड बताते हैं, ''हम इसीलिए हँसते हैं कि तुम आज मनुष्य हो किन्तु कल हमारी तरह मुण्ड बनकर रस्सी सें लटक जाओगे।

कल तेल में तलकर सपुनाथ तुम्हें खा जायेगा और तुम्हारा मुण्ड हमारे साथ आ जायेगा। भोजा एक पाँव पर खड़े होकर सपुनाथ से बचने का उपाय मुण्ड से पूछता है। मुण्ड कहते हैं, ''पाँचवाँ चक्कर पूरा करते वख्त तुम सपुनाथ को बीच में पकड़कर तेल में ड़ालोगे तो तुम्हारी जीत होगी। और तुम्हें डालेगा तो तुम्हारी हार होगी और तुम्हारा मस्तक हमारे साथ आ जायेगा।''

सपुनाथ की आज्ञा अनुसार भोजा लकड़ी इकट्ठी करता है और सपुनाथ बारह घानी का तेल ले आता है।

दूसरे दिन प्रातःकाल ही सपुनाथ आग जलाकर कड़ाही में तेल उबालता है। भोजा चक्कर लगाने के लिये आगे होता है। चार चक्कर के बाद भोजा सपुनाथ को आगे करके बीच में पकड़कर उबलते तेल में डाल रहा है। उबलते तेल में गिरते-गिरते सपुनाथ कहता है- ''तेल में गिरने पर मैं स्वर्ण का हो जाऊँगा। मेरे सोने की देह (काया) को जरूरत अनुसार थोड़ा थोड़ा ले जाना। एक साथ सारा सोना मत ले जाना। मेरी इस बात को गौर करोगे तो तुम और तुम्हारी पीढ़ियाँ सुखी होगी। अगर सारा सोना एक साथ ले जाओगे तो तुम में अहंकार आ जायेगा और तुम्हारा सर्वनाश होगा।'' सपुनाथ की बात सुनकर भोजा सपुनाथ को कड़ाही में डालता है। सपुनाथ की देह स्वर्ण में बदल गयी।

भोजा सपुनाथ की केसर घोड़ी को कमरे से बाहर निकालकर सवार होकर के गरीओरकोट की ओर जाता है। साढू खटियाणी भोजा और केसर घोड़ी का दीपक और चावल से स्वागत करती है। भोजा केसर घोड़ी को सातवें तहखाने में बाँधकर अपने भाइयों से कहता है, ''मैं सपुनाथ को कड़ाही में डाल के आया हूँ। सपुनाथ का सोना ही सोना बन गया है। देरावट नगरी से हमें सोना ले आना चाहिए।'' गुजोर पूरा सोना गरीओरकोट में ले आते हैं, और सभी भाई समान हिस्से में बाँट लेते हैं।

भाथु कलवारिन

गायों की समृद्धि और देरावटनगर की संपत्ति के नशें में चूर गुजरों को रात और दिन तथा अंधेरा और उजाले का होश नहीं था। वे बाहर चौराहे पर बैठे-बैठे आपस में दर्प से भरी बातें करते हुए एक दूसरे को कहते हैं, ''भाई ! हमें डोळीराण में भाथु कलवारिन के वहाँ शराब पीने जाना चाहिए !'' सुवर्ण के झाड़ू से आँगन बुहारती, तांत्रिक विद्या की जानकार रखमा राठोड़िन को गुजोरों की शराब पीने की योजना का पता चलता है

तो तुरंत ही गुजोरों के पास पहुँचकर कहती है, ''देवरजी, डोळीराण में जाने की बात न कीजिये। हम सब मेरे मायके जायेंगे।'' प्रत्युत्तर में भोजा कहता है, ''भौजी, तेरे मायके माणदरा में तो कडुआ पानी है। हम तो डोळीराण में शराबपान करेंगे। एक प्याली पीयेंगे और ढाई दिन उसका नशा रहेगा।'' रखमा कहती है, ''आप लोग पागलों सी बात करना छोड़ दो। मेरा कहा भविष्य में सही होगा।''

गुजोर रखमा की बात नहीं मानते और घोड़ों पर सवार हो चलते हैं। उनको देखकर सूर्यप्रकाश स्वयं फीका पड़ जाता है। घोड़े पर तीखे चाबुक पड़ने से घोड़े पवन की सी तेज गति सें स्वर्ग की ओर उड़ान भर रहे हैं। घोड़ों की तेज गति के साथ ही साथ पर्वतों को भी जैसे पर लगे हैं और गुजोर डोळीराण में पहुँचने के लिए बेताब हैं।'' आकाश में बिजली कौंधती है। जिससे गुजरों के स्वर्ण आभूषण चमक उठते हैं। अतः ऐसा प्रतीत होता है कि मानो गुजरों की देह पर ही बिजली चमक रही है। मेघ बरस रहे हैं और घोड़े बाज की तरह डोळीराण की ओर जा रहे हैं। जैसे जैसे डोळीराण के निकट पहुँचते हैं, धरित्री काँप उठती है। परिणामतः भाथु कलाली के महल के कँगूरे डोलने लगे हैं। गुजोर तलवार की नोक से भाथु के महल का द्वार खोलते हैं और आँगन में जड़े काँच पर घोड़े घुमाते हैं। काँच टूटने से कुरंचें उड़ती हैं और आँगन के बेल-बुटे टूटने लगते हैं।

भाथु कलवारिन महल में गाढ़ निद्रा में सो रही है। अहंकारी सरदारों को देखकर भयभीत हीरावर दासी दौड़ती हुई भाथु के पास आती है, और त्वरा से उसको जगाती है। मुँह धोने के लिए जलपात्र देती है और कहती है कि ''हमारे आँगन की तो हालत खराब हो गयी है। न जाने कोई अहंकारी सरदार आये हैं, जो आँगन के समूचे काँच तोड़ डाले हैं और लताबेल आदि घोड़े खा रहे हैं।''

मुँह धोके भाथु श्रृंगार सजने में लगी हुई है। बालों में मोती पीरोती है और पाँव में स्वर्णजड़ित जुते पहनकर हाथ में चमड़े की चाबुक लेकर तुरंत ही बादल महल से नीचे आती है। भाथु दर्पयुक्त तेज नजर से सरदारों की ओर देखती हुई पूछती है, ''कौन हो तुम अहंकारी लोग, जो इस कदर मेरे आँगन को बरबाद किये जा रहे हो !'' सुनकर गुजोर बताते हैं, ''रहने दे ये सारी बातें और हमें शराब पिला।'' भाथु कहती है, ''मेरे हाथों से बनी मदिरा तुम नहीं पी पाओगे। मामूली छाश पीनेवाले गुजोर ! मेरी मदिरा तो डोळीराण का राणा ही पी सकता है, जिसका नशा ढाई दिन तक बना रहता है।''

भाथु की अप्रिय बात सुनकर भोजा गुस्से में केसर घोड़ी की गरदन से स्वर्ण की माला निकालकर भाथु की ओर फेंकते हुए कहता है, ''तू ये सब अंड़ शंड़ बोल मत

और शराब पिला।'' अहंकार के साथ उस स्वर्ण की माला को पाँव से खींचकर भाथु सुनार और लुहार के पास जंचवाके वापस आती है। सोने की माला को एक जगह रखकर भाथु गुजरों को शराब देने लगती है। प्रत्येक गुजोर बारह-बारह शराब के घड़े पी जाता है। फिर भी उनको नशा नहीं चढ़ता। अंत में थककर भाथु शराब के कुएँ पर जाकर कोल्हू जोड़ती है।

भोजा कोल्हू के पास जाकर सीमदेव खेतला और माता चामुंड़ा का नाम लेकर शराब पीने लगता है। पी सके उतनी शराब पीता है, और आधी शराब मूँछों से ऊपर उछालता है। जो शराब ऊपर उठती है, उससे वैकुंठ का सिंहासन कंपित हो उठता है। उपर उड़ी हुई शराब स्वर्ग से वापस पृथ्वी पर आती है और गरीओरकोट ऊपर बरस ने लगती है। भोजा आधी शराब धरती पर डालता है और पाँव के अँगूठे से दबाता है। शराब पाताल में जाती है और वासुकि के मस्तक पर शराब की धारा बरसने लगती है।

धरती कंपित होती है। भाथु का शराब का पूरा कुआँ खत्म हो जाता है। फिर भी भोजा को नशा नहीं होता। भोजा कहता है, ''भाथु, अभी तक मुझे तेरी शराब का नशा नहीं चढ़ा।'' भाथु कहती है, ''भोजाजी, तुम्हें पिलाते पिलाते तो शराब का कुआँ भी खत्म हो गया। अब मैं कहाँ से दूसरी शराब लाऊँ ?'' गुस्से में भोजा कहता है, ''रांड़, तू तो कहती थी कि हम मामूली छाश पीनेवाले, तेरी शराब नहीं पी सकते ! अब हमें नशा चढ़े ऐसी शराब पिला या वह सोने की माला वापस कर दे।''

स्वर्ग में शराब की वर्षा हो रही है। जिससे स्वर्ग का सिंहासन कंपित हो उठा है। भगवान वैकुंठपुरी से धरती पर आते हैं।

भगवान को गरीओरकोट में आते देखकर मेहा की सती स्त्री रखमा कहती है, ''मेरे लाड़ले देवर ! तुम लोगों ने मेरा कहा नहीं माना और डोळीराण में जाकर शराब पी आये और हल्ला मचाया अतः भगवान तुम्हारा नाश करने हेतु स्वयं आ रहे हैं ! भगवान कुबड़े के रूपमें हैं। मगर उनके क्रोध से बचना हो तो उनका स्वागत करके बड़े स्नेह से घर ले आओ। रेशम की दरी पर बिठाकर उनको खुश करने के लिये होम यज्ञ करो।''

रखमा के आदेश से छः और छब्बीस गुजोर भगवान का स्वागत करके चौराहे पर बिछी रेशम के बिछावन पर बैठाते हैं। होम-यज्ञ करके गुजोर भगवान की सेवा करते हैं। भगवान सोचते हैं, ''ऐसे निरभिमानी और स्नेही गुजोरों को मैं कैसे मार सकता हूँ ?।'' गुजोरों से संतुष्ट हुए भगवान वैकुंठ की ओर वापस जाते हैं।

बीच में कदलीवन से गुजरते समय भूखियादेवी भूख से त्रस्त होकर भगवान पर टूट

पड़ती है। भगवान उससे कहते हैं, ''स्वयं भगवान को खाने आयी है। जा रंड़ी, गरीओरकोट में गुजोरों को खाना।'' भूखियादेवी कहती है, ''भैया, तू है ? मैं तो बारह साल की निद्रा से अभी जगी हूँ। बड़ी भूखी थी इसलिए तुम पर टूट पड़ी। लेकिन तुम कहाँ से आ रहे हो ?'' भगवान कहते हैं, ''मैं तो गरीओरकोट गया था। वहाँ के गुजोर शराब के नशे में मत्त हो उठे थे।'' भूखियादेवी कहती है, ''अगर तुम आदेश देते हो तो मैं जाऊँ और उनका सर्वनाश कर दूँ। रक्त की नदियाँ बहेंगी और नवलख देवियाँ जी भरके लहू पीकर तृप्त होंगी।'' भगवान कहते हैं, ''जा, तुझे जो अच्छा लगे करना। लेकिन अहंकारियोंका दर्प जरूर दूर करना।'' भूखियादेवी बताती है, ''मैं आधी पाताल में शिला बनकर उतरती हूँ और आधी निःसंतान हियोरसोढ़ा राणा के देश में रानी कमलादे के उदर से कुँवरी के रूपमें अवतार धारण करती हूँ। जब तुम्हारे द्वारा गुजरों के देश में अकाल पड़ेगा तो गुजोर कुँआ खोदने हेतु पाताल फोड़ेंगे। तब मैं काली शिला के रूप में सामने आकर उनके कुएँ में पानी आने नहीं दूँगी। हियोर-सोढ़ा के देश में कभी अकाल न होने देना। अतः गुजोर अपनी सारी गायें लेकर हियोर-सोढ़ा के देश आयेंगे तो मैं उन्हें प्रेम में फँसाकर खत्म कर दूँगी। तब सारे देवी-देवतागण गुजोरों का रक्तपान करके तृप्त होंगे। और इस प्रकार उनका सर्वनाश करके उनके मुण्ड की माला बनाकर मैं तेरे दर्शनार्थ आऊँगी।'' भगवान उसे आशीर्वाद देकर वैकुंठ चले जाते हैं।

झेलु होलागण :

गरिओरकोट में भयंकर अकाल पड़ा हुआ है और जलाशयों में कहीं पर भी पानी की बूँद तक नहीं। भूख और प्यास से गायें मर रही हैं। सायीत निकाल कर अच्छी जगहों पर गुजोर कुआँ खोदते हैं। कुआँ खोदते समय थोड़ा खोदने पर काली शिलाएँ दीखाई देती हैं। परिणामतः इस प्रकार कुँआ बनाने में गुजोर अपने आपको असमर्थ पाकर वापस आते हैं। हियोर सोढ़ा के प्रदेश में चारों ओर खुशी ही खुशी है। अच्छी वर्षा हो रही है और सर्वत्र हरियाली छायी हुई है।

गुजोर अपना सरसामान एकत्रित करते हैं और अपने देश को छोड़ते समय बड़े दुःख के साथ कहते हैं, ''ऐ मेरे वतन (गरीओरकोट) खुश रहना ! अगर जीवित रहे तो पुनः तुम्हारी गोद में आयेंगे। अगर मर गये तो राम-राम।'' संजोग के शिकार हुए गुजोर नवलाख गायें लेकर हियोरसोढ़ा के देश में आते हैं। गुजोर गायों के साथ सूरज की निकलती किरणों के साथ खाखर खेड़ों में पहुँचते हैं। भोजा मेहा को कहता है, ''मेहाजी,

हम सोढ़ा राणा को मिलने जायेंगे।'' दोनों भाई केसर घोड़ी पर सवार होकर सोढ़ा राणा को मिलने जाते हैं और राजा को कहते हैं, ''राजाजी हम अपनी सारी गायें और परिवार समेत आपके आश्रय में आये हैं।'' राणा प्रत्युत्तर में कहता है, ''तुम लोगों ने यहाँ आकर अच्छा किया। भोजाजी, मैं अपना 'झेझणिया झोड़' और 'खाखर खेड़ों' तुम्हें दे देता हूँ। बड़ी मस्ती से गायें चराना और खुश रहना।'' भोजा और मेहा को देखकर राजा की कुँवरी झेलु दौड़कर आती है और भोजा से शरारत करने लगती है।

राजा को मिलके फिर दोनों भाई खाखर खेड़ों में जाते हैं और नवलाख गायें और परिवार आदि के रहने की सुविधा जुटाने में लग गये हैं। भोजा बड़ी मस्ती से झेझणिया झोड़ में गायों को चराते हुए कभी बाँसुरी तो कभी घोड़लिया बजाता है।

सोढ़ा राणा की कुँवरी झेलु बादल महल में रेशम के झूले पर झूल रही थी कि अचानक वह बाँसुरी की तान सुनती है। झेलु अपने कक्ष के झरोखे से बाहर झाँकती है। दूर तक झेझणिया झोड़ में गायें चरती हुई दिखाई देती हैं। झेलु हीरावर दासी को बुलाकर कहती है, ''हीरावर, तू जाकर पिताजी से बोल कि हम भी 'झेझणिया झोड़' में गायें चराने जायेंगी।''

हीरावर राजा के दरबार में जा पहुँचती है और राणा को झेलु कुँवरी की गायें चराने की इच्छा व्यक्त करती है। साथ ही साथ उनकी अनुमति के लिये बिनती करती है। प्रत्युत्तर में राजा बताता है, ''हम तो राजपरिवार के हैं। गायें तो हमारे दास, सेवक आदि चराते हैं, हम नहीं।'' हीरावर कुँवरी के पास आकर राजा का यह उत्तर सुनाती है। यह उत्तर सुनकर झेलु को राजा पर गुस्सा आता है और गुस्से में कहती है, ''अगर मुझे गायें चराने की अनुमति नहीं दी गयी तो मैं कटार भोंककर या महल से कूदकर अपनी जान दे दूँगी। अतः पिताजी को स्त्री हत्या का पाप लगेगा।''

झेलु की बातें सुनकर हीरावर दौड़ती हुई राजदरबार में आती है और राजा के सामने कुँवरी की मनःस्थिति का निरूपण करती है। राजा चौंक उठता है और कहता है, ''मेरी तो एक ही कुँवरी है। जा हीरावर, तुरंत जा, हम झेलु को उसकी इच्छानुसार गायें चराने की अनुमति देते हैं।'' हीरावर राजा की बात कुँवरी से कहती है। कुँवरी खुश होकर तैयार होने लगती है। बालों में मोती पिरोती है। कमल दंड़ लेकर प्रसन्नता पूर्वक बाँसुरी की तान की दिशा में अपनी गायें लेकर आगे बढ़ती है। भोजा कहता है, ''मेरी गायों के वृंद में तो साँड़ है। तेरी गायों को परेशान करेगा।'' झेलु कहती है, ''पशु पशुओं के साथ विचरेंगे और मनुष्य मनुष्यों के साथ घूमेंगे। मैं तो तेरे लिये आयी हूँ। भोजाजी

बनमें तुम्हारी बँसी बजती थी उसकी आवाज मेरे कानों तक आयी और मैं बादल महल में न रह सकी।''

भोजा बाँसुरी वादन में मग्न है और झेलु कुँवरी उसकी तान में मत्त होकर नाच रही है। कुँवरी नाचते नाचते भोजा से कहती है, ''गायें चरती रहेंगी, चलो हम खाखर खेड़ों घूम आयें।''

झेलु हीरावर से कहती है, ''तू फूर्ति से जा और अपने साथ आमूपत्ती, मदनफल, तिल, जौ, दो लोटे और साथ में पुरोहित को भी ले कर आ।''

हीरावर विवाह की सारी सामग्री ले आती है। खाखर खेड़ों में पुरोहित के द्वारा विवाहमंड़प तैयार हुआ है। जिसमें अग्नि की साक्षी में भाँवर लेकर झेलु कुँवरी और भोजा की विवाह विधि का समापन होता है।

तत्पश्चात् दोनों 'झीलनी सरोवर' आ पहुँचते हैं। दोनों स्नान हेतु सरोवर के पानी में उतरते हैं और शरारतें करने लगते हैं। पानी में नहाते-नहाते एक दूसरे के ऊपर पानी उछालते हैं। जिस दौरान उछला हुआ पानी ध्रुव-तारक तक जा पहुँचता है। झेलु कहती है, ''भोजा चलो हम पानी में लुकाछिपी खेलें।'' वे दोनों खेल खेलने लगते हैं। भोजा पानी के अंदर साँप बनकर पत्थर के नीचे छिप जाता है। तत्पश्चात् झेलु भी पानी में डुबकी लगाकर पत्थर के नीचे छिपे साँप के रूप में भोजा को ढूँढ़ निकालती है। बाद में झेलु कहती है, ''भोजा, अब मेरी बारी।'' झेलु मछली बनकर पानी की घास में छिप जाती है। भोजा पानी में डुबकी लगाकर झेलु को एक पत्थर से दूसरे पत्थर ढूँढ़ता है। लेकिन झेलु मिलती नहीं है। अतः बाहर निकलकर भोजा रोने-कलपने लगता है। और कहता है, ''मेरी झेलु रानी को पानी में मगरमच्छ खा गये, अरे ! रे ! अब मैं राजाजी को क्या मुँह दिखाऊँ !'' भोजा विलाप कर रहा है, और उसके पीछे छिपकर खड़ी-खड़ी झेलु हँस रही है। झेलु भोजा को कहती है, ''अरे, तुम तो औरत जैसे हो। चलो, जाने दो, अब हमें बड़ी भूख लगी है। मैं तुम्हारे घर जाकर खाना ले आती हूँ।'' झेलु भोजा के घर पहुँचती है और कहती है, ''सासजी, आपके बेटे के लिए खाना दो।'' सादू खटियाणी पूछती है, ''अरे, तू कब से मेरे बेटे की बहू हो गई ?'' प्रत्युत्तर में झेलु कहती है, ''कल दोपहर से । सादू खटियाणी घड़े में 'खटि छाश' और 'घेंस' देते हुए कहती है, ''हम तो खटी छाश पीनेवाले गुजोर हैं।''

झेलु के लिये डोळीराण के राणा लेंबदे की ओर से मँगनी का श्रीफल आया है। सोढ़ा राणा कहते हैं, ''बेटी, वीर कछोटा नीचे रख। हमारे घर मेहमान पधारे हैं तुम्हारे

विवाह की मँगनी लेकर आये हैं। अब तू राणा लेंबदे की वाग्दत्ता है। झेलु प्रत्युत्तर में कहती है, ''पिताजी, मैं राणा से विवाह नहीं करूँगी। मैं तो गुजोरों से ब्याहूँगी।'' सोढ़ा राणा कहते हैं, ''बेटी, मेरी बात सुन। राणा से विवाह करेगी तो रानी कहलायेगी। गुजोर से विवाह करेगी तो गुजोरिन कहलायेगी।''

हाथ में कमल दंड़ लिये झेलु बादल महल में जाती है और एक पात्र में 'चूरमा' लेकर आती है। 'झीलनी सरोवर' जाकर भोजा को खाना देती है और पलटकर रोने लगी है तो भोजा पूछता है, ''अरे सोढ़ा राणा की कुँवरी, तुम क्यों रो रही हो ?'' झेलु बताती है, ''मेरे लिये राणा लेंबदे की मँगनी आयी है। सो रोऊँ नहीं तो क्या करूँ? भोजा मैं तुम्हारे कारण रोती हूँ।'' भोजा बताता है, 'तुम्हें दुःखी होने की आवश्यकता नहीं। तुम्हें मुझसे कोई नहीं छीन सकता।'' झेलु चिंता के स्वर में पूछती है, ''भोजा उसका क्या सबूत है ?'' भोजा सबूत के रूप में धागा बाँधता है और कहता है, ''जा, झेलु अब तू मेरी रानी है।'' झेलु व्यंग्य में जोर-जोर से हँसती है।

'चूरमा' खाने हेतु झेलु बरगद के पत्ते लेने जाती है। पेड़ पर पत्ते-पत्ते पर दीये जल रहे हैं। उस पेड़ पर असंख्य देवी-देवताओं का वास है। वहाँ पहुँचने पर सभी देवियाँ झेलु से प्रश्न करती हैं, ''अरे, तू तो गुजोरों को खत्म करने आयी थी और यहाँ उनके प्रेम में पड़ गयी। झेलु बताती है, ''देवीगण आप दुःखी मत होइये, मेरे लिये डोळीराण के राणा की मँगनी आयी है। लेकिन मैं गुजरों से विवाह करूँगी। परिणामतः उन दोनों के बीच युद्ध होगा। रक्त की धाराएँ बहेंगी और आप सब खप्पर भरकर रक्तपान करेंगी। मैं गुजोरों को खत्म करके उनके मस्तक की माला बनाकर भगवान के दर्शनार्थ वैकुंठ जाऊँगी।

बरगद के पत्ते लेकर झेलु वापस आती है। दोनों साथ में पत्ते पर चूरमा खाते हैं। आकाश में बिजली कौंध रही है। भोजा नवलाख गायों को लेकर घर की ओर रवाना हुआ है। झेलु बादल महल जाती है।

गरीओरकोट में मूसलाधार वर्षा हो रही है। बिजली चमक रही है। छः और छब्बीस गुजोर हियोर सोढ़ा के राजमहल में जाते हैं। वे राणा के पास जाकर कहते हैं, ''हमारे देश में बारिश हुई है। अब हम अपने देश में वापस जाते हैं। जाते-जाते आपसे हमारी एक प्रार्थना है, ''आपकी बेटी के विवाहप्रसंग पर हमें अवश्य निमंत्रित करना।''

छः और छव्वीस गुजोर अपने वतन गरीओरकोट पहुँचकर उस भूमि को वंदन करते हैं। वे अपने-अपने घरों को ठीक करते हैं। अच्छी वर्षा के परिणामस्वरूप समृद्ध हुए

गुजरों का जीवनकाल सुख-चैन से व्यतीत हो रहा है।

वे अहंकारी होते जा रहे हैं। सोढ़ा राणा के नगर में कुँवरी झेलु के विवाह की तैयारी हो रही है। झेलु अपने पिताजी से गुजरों को निमंत्रित करने की याद दिलाती है और कहती है, ''उन्हें अवश्य बुलाना, वे लोग यहाँ रह चुके हैं।''

झेलु के विवाह का निमंत्रण पहुँचने पर सोलहा श्रृंगार सजने लगे हैं। भोजा सोने का जालरिया टोप सिर पर धारण करता है। मेहो सोने का मुकुट सिर पर धारण करता है और सब भाई अपने घोड़ों को तैयार करते हैं और साथ में रत्न जवाहरात। सोढ़ा राणा का देश निकट आ रहा है। घोड़ों की टाप से बादलमहल कंपित हो रहा है। झेलु कुँवरी दासी हीरावर से कहती है, 'हीरल, स्वर्णिम प्रकाश फैल रहा है। लगता है, गुजोर आ रहे हैं। तुम स्वागत के लिये द्वार पर पहुँचो।'' द्वार पर हीरावर गुजरों को तिलक करके उनका स्वागत करती है। झेलु के कहने पर हीरावर गुजरों को लाख का - ताश देती है।

गुजरों के निवास की व्यवस्था राणा के उपवन में की गयी है। घोड़ों को खिलाने के लिये फूल पत्ते डाले गये हैं। फूलों के आदी गुजोर उनकी खुशबू का आनंद लेते हुए आराम कर रहे हैं। बड़ ओर पीपल के तले राणा लेंबदे की बारात बैठी है। झेलु कुँवरी से विवाह करने के हेतु राणा लेंबदे अश्वारूढ़ होकर हाथ में तलवार लिये हुए विवाह मंड़प का बंदनवार तोड़ने को पहुँचता है। किन्तु उसमें वह असफल रहता है और पुनः सफलता प्राप्त करने को राणा लेंबदे भोजा से दो लाख सोनामहोर देकर केसर घोड़ी माँगता है।

भोजा कहता है, ''दो लाख के बदले चार लाख दो, तब भी मैं तुम्हें केसर घोड़ी नहीं दे सकता। अगर तुम कहते हो तो तुम्हारे बदले बंदनवार मैं तोड़ दूँ। तुम विवाह मंड़प में जाओ, मैं तुम्हारे बदले बंदनवार तोड़ के आता हूँ।''

भोजा लगाम खींचता है और केसर ऊँची छलांग लगाती है। भोजा एक ही झटके से बंदनवार तोड़ देता है। बादलमहल में खड़ी झेलु हाथ नीचा करती है और भोजा हाथ ऊँचा करके खड़ग झेलु को देते हुए कहता है, ''झेलु, तुम विवाहमंड़प में जाओ तब इस खड़ग के साथ भाँवर लेना।'' झेलु बादलमहल में खड़ी खड़ी भोजा से कहती है, ''धन्य गुजोर, वारी जाऊँ तुम पर! तुम बंदनवार तोड़ते हो यह देखने की मुझे बार-बार इच्छा होती है।''

लेंबदे राणा झेलु के पीछे-पीछे विवाह मंड़प में भाँवर लगाता है। झेलु भोजा गुजोर का खड़ग लेकर पाँच भाँवर लगाती है। राणा सभी लोगों के आशीर्वाद लेकर बारात के

साथ अपने आवास पर जाता है।

गुजर झेलु के विवाहमंड़प में नाचते आते हैं। मंड़प में नाचते-नाचते वह सोने चाँदी के कीमती जेवर और मोती को ऊँचे ऊछालते हैं। मंड़प में देखने आये लोग मोती बटोरने लगे हैं और कहते हैं, ''शाबाश ! बाघजी के बेटे शाबाश ! समय बीत जायेगा किन्तु तुम्हारी वीरता की यादें हमेशा बनी रहेंगी।'' मंड़प में नाचने के बाद गुजोर बाहर आते हैं और फूलों के भोगी गुजोर फूलबाड़ी में जाते हैं।

झेलु हीरावर से कहती है, ''तुम राणा के पास जाकर पूछो कि सबसे बड़ा फूल कौन सा है?'' हीरावर इस प्रकार राणा के पास जाकर पूछती है। तब राणा बताते हैं, ''सब से बड़ा फूल तूबड़ का है।'' हीरावर झेलु को लेंबदे राणा का जवाब सुनाती है। झेलु कहती है, '' अब तू फूलवाड़ी में जाकर गुजोर से इस सवाल का जवाब ले आ।''

हीरावर भोजा के पास जाकर कहती है, ''जीजाजी, सबसे बड़ा फूल कौन सा है ?'' भोजा कहता है, ''एक फूल तो आसमान और धरती है। दूसरा जवाब बारिश और बादल है ! तीसरा उत्तर माता का आँचल है, और अंतिम उत्तर है कपास का फूल।'' हीरावर द्वारा भोजा का उत्तर सुनकर झेलु प्रसन्न होकर कहती है, ''धन्य हो मेरे गुजोर ! धन्य हो तुम्हारी बुद्धि।''

बादलमहल में बारात आ रही है। राणा लेंबदे महल में जाता है और महल से झेलु रानी को लेकर बाहर आते हैं। गुजोर और राणा एक दूसरों से मीली भेंट करते हैं। बाद में गुजोर सोढ़ा राणा से मिलकर चले जाते हैं।

डोळीराण से राणा लेंबदे की बारात रवाना हुई है। जब बारात राणा के नगर में प्रवेश करती है, तो झेलु राणा से बताती है, ''मैं आपके पुराने महल में नहीं रहूँगी। मेरे लिए नवीन महल निर्माण कीजिए।'' तदनंतर रानी को फूलबाड़ी भवन में निवास दिया गया है। समय बीतने पर रानी के लिए नवीन महल तैयार हो जाता है। तो झेलु राणा से कहती है, ''मैं आपके नवीन महल में जाऊँगी जरूर किन्तु मेरे शयन के लिए आपकी वह पुरानी शैया का उपयोग मैं नहीं करूँगी। मेरे लिए नयी शैया बनवाइये।'' बालम बढ़ई चंदन काष्ट की नवीन शैया तैयार करता है। रानी नये महल पर जाती है और लेंबदे को कहती है, ''राजा, मैं सोढ़ा राणा के वहाँ थी उन दिनों खाखर खेड़ों में गाय-बछेरे चराते वक्त एक दिन खाखरखेड़ों में मुझे बड़ा तेज बुखार आया था। उस दिन भोजा गुजोर ने बुखार के इलाज के लिए धागा बाँधा था और कहा था कि तू राणा से विवाह करने के बाद सफेद सूअर मारके उसके लहू से तुम अपनी शैया को रंगना और उसके रक्त

का शयनकक्ष में छिड़काव करके दाम्पत्यधर्म का प्रारंभ करना। राणाजी, आज मुझे फिरसे तेज बुखार है।'' लेंबदे उत्तर देता है, ''तो फिर सफेद सूअर मारने में कितनी देर ?'' राणा, सरदार और डोळीराण के लोग सूअर मारने के लिए ढाल-तलवार लेकर मेरु-सुमेरु पर्वत पर जाते हैं। डोळीराण सूनी पड़ी है।

तदनंतर झेलु रानी कुम्हारिन का बेश धारण करके हाथ में कुदाल और सिर पर टोकरी लेकर गधे के साथ जंगल की ओर जाती है। नगर के मुख्य द्वार पर पहुँचने पर द्वारपाल उसे टोकते हुए पूछता है, ''आधी रात को निकलने वाली कौन हो तुम ?'' उत्तर देते हुए झेलु बताती है, ''भैया, मैं कुम्हारिन हूँ। राणाजी नयी रानी की शैया रंगने के लिये सूअर मारने गये हैं और मैं नया महल पोतने के लिए मिट्टी लेने जा रही हूँ।'' इतना कहते हुए झेलु आगे निकल जाती है। आगे जाकर बीच रास्ते टोकरी और कुदाल को एक ओर फेंक कर वह गरीओरकोटकी ओर निकल जाती है।

रास्ते में उसे खेमा काहीदी मिलता है जो उससे जबरन विवाह के लिए प्रस्ताव रखता है। अतः झेलु उसकी हत्या करके गुजोरों की नगरी की ओर आगे बढ़ती है। झेलु की देह गेहूँ के पिंड़ जैसी है। वह होलीकी ज्वाला जैसी दिखती है। झेलु त्वरा से गरीओरकोटमें जाती है। भम्मरीये चौराहे पर जाकर खड़ी रहती है। रखमा राठोड़िन कहती है, ''देवरजी झेलु आयी है। उसे वापस भेज दो। झेलु तो बड़े खानदान की है। मेरा कहा नहीं मानोगे तो गरीओरकोट में अंधकार हो जायेगा।'' भोजा कहता है, ''भौजी, आँगन में आया हुआ बछड़ा और घर पर आयी हुई नारी को हम घर से निकालेंगे नहीं।'' गुजोर रखमा राठोड़िन का कहना नहीं मानते और झेलु को घर में रखते हैं।

सूअर के शिकार से वापस लौटने पर महल में रानी झेलु को न पाकर और उसके गरीओर पहुँचने की खबर सुनकर राणा लेंबदे अपनी सेना के साथ युद्ध के लिए गरीओरकोट की सीमा में उतर आया है। लेंबदे की सेना के सामने गुजरों की पालतू कुतिया के बारह बेटे (कुत्ते) लगातार बारह साल तक राणा की सेना का युद्ध में प्रतिकार करते हैं। बाद में भोजा पूछता है, ''भौजी, लेंबदे से बचने के लिए हमें क्या करना चाहिए ?'' ''देवरजी मुझे अब क्या पूछ रहे हो, तुम्हारा बुरा दिन आया है।''

रखमा राठोड़िन मंत्रप्रयोग से अमरघूंटा बनाकर भोजा को देते हुए कहती है, ''भोजा यह अमरघूंटा राणा लेंबदे की सेना के सामने रख आ। जिसके साथ लेंबदे की सेना अब भी बारह साल तक युद्ध करती रहेगी और आखिरकार राणा थक जायेगा।''

किन्तु तदनंतर राणा लेंबदे को पता चलने पर वह अपने सिर की पगड़ी अमरघूंटों के चरणों में उतार कर प्रार्थना करते हुए उनसे कहते हैं, ''अमर घूंटे, भोजा ने मेरी रानी को घर में रखी है, उसके सामने लड़ने के बजाय तुम मेरे सामने क्यों लड़ते हो ?'' लेंबदे की इस प्रार्थना से अमरघूंटों को सत्यासत्य का पता चलता है और वे गरीओरकोट में वापस आते हैं तथा राणा लेंबदे के साथ गुजरों के द्वारा हुए अन्याय के कारण भम्मरिया चौराहे पर जाकर सारे गुजरों को ढूँढ़-ढूँढ़ कर खत्म करते हैं। उन्होंने गुजरों के पूरे वंश को खत्म कर दिया। गरीओरकोट में रक्त की नदियाँ बहने लगी।

वैकुंठपुरी से नवलाख देवियाँ खाली खप्पर लेकर गरीओरकोट में उतर आयी। देवियाँ अहंकारी गुजोरों का लहू जी भरकर पीती हैं।

भूखियादेवी (झेलु) छः और छब्बीस गुजोर के मस्तक काटकर उस की माला बनाकर गले में पहनकर भगवान के दर्शन के लिए चली जाती है।

गरीओरकोट में बारह चौराहे सूने पड़े हैं। सभी घोड़े और घोड़ियाँ सूनी पड़ी हैं। गरीओरकोट में काले कौए उड़ रहे हैं।

देवनारायण

साढू खटियाणी पानी का नया कुंभ लेकर पानी भरने को झांझर बावड़ी जाती है। बावड़ी में कमलका फूल तैर रहा है। वहाँ पहुँच कर पानी में पैर रखते हुए और सूरज देवता को वंदन करते हुए साढू खटियाणी कहती है, ''मेरे गुजोरों का फूल हो तो मेरे कुंभ में आना।'' कमल का फूल खेलता हुआ कुंभ में आ जाता है। कुंभ को सिर पर रखकर साढू खटियाणी गरीओरकोट में वापस आती है, और कुंभ के मुँह को वस्त्र से बाँधकर रख देती है । नौ मास और नौ दिन के बाद वस्त्र ढके कुंभ को वस्त्र से मुक्त करती है और कुंभ के भीतर कुँवर देवजी ने जन्मधारण कर लिया है। देवजी कुँवर के जन्म से लेंबदे के महल के कँगूरे कंपित होते हैं। राणा दूती मालिन को बुलाकर कहता है, ''अवश्य गरीओरकोट में दुश्मन रूप में किसी कुँवर ने जन्म लिया है। जाओ दूती, उसे खत्म करके आओ तो इनाम में तुम्हें मेरे राज्य का आधा हिस्सा दूँगा।''

दूती मालिन गरीओरकोट में जाती है और बारह चौराहे के पास आकर रोने कलपने लगती है और बोलती रहती है, ''राणा लेंबदे का सत्यानाश हो जायेगा । मेरे बारह चौराहे सूने कर दिये। पूरे क्षेत्र के अगुआ थे मेरे मेहो और भोजो, मेरा गरीओरकोट सूना पड़ा है।'' रोना कलपना सुनकर साढू खटियाणी के मन में आया कि जरूर मेरे मेहा

और भोजा की धर्म की बहन भम्मरिया चौराहे आकर रो रही है।

साढू खटियाणी उसके पास जाकर पूछती है, ''बहन, तू कौन है और क्यों रो रही है ?'' दूती मालिन प्रत्युत्तर में कहती है, ''लेंबदे राणा ने मेरे सभी भाइओं को खत्म कर दिया। रोऊँ नहीं तो क्या करूँ ?'' साढू खटियाणी उसे समझाबुझाकर अपने घर ले आती है। घर में देवजी कुँवर को देखकर प्रसन्न होकर कहती है, ''हे प्रभु, तूने बहुत अच्छा किया ! मेरे भाई निर्वंश नहीं मरे। ये तो मेरा भाई है।''

दूसरे दिन जब साढू खटियाणी झांझर बावडी में पानी भरने जाती है तब मालिन अपने उरोजों पर विष लगाती है और देवजी कुँवर को अपनी गोद में लेकर स्तनपान करवाते हुए कहती है, ''ले बेटे दूध पी।'' बालक देवजी कुँवर के स्तनपान शुरू करते ही मालिनकी सारी नाड़ियाँ खिंचने लगती हैं। परिणामस्वरूप दूती मालिन मुरझाये हुए सालर वृक्ष जैसी हो गई है। साढू खटियाणी पानी लेकर वापस आती है तो दूती मालिन की हालत देखकर सारी बात समझ जाती है और दूती मालिन को भला-बुरा सुनाती है। दूती जान बचाने के लिए अवसर पाकर वहाँ से भाग निकलती है और डोळीराण में जाकर राणा को कहती है, ''गरीओरकोट में तो गोरख अवतार का सा कोई पैदा हुआ है, जिससे बचना बड़ा मुश्किल है।'' तदन्तर गरीओरकोट में कुँवर देवजी के समुचित लालन पालन से वह बड़ा होता जा रहा है। बड़ा होकर देवजी कुँवर देवनारायण कहलाने लगा है।

दीपावली का दिन है; देवनारायण सालोर देवी से नमृतापूर्वक पूछता है, ''देवी माँ, आपके तो आभूषण थे। मैंने सुना है हमारी गायों के स्वर्ण जड़ित सींग थे और पारेवा साँड़ को स्वर्ण जड़ित खुरियाँ थीं। आज बड़ा शुभ दिन है, हम सब शस्त्र सजकर डोळीराण में मेरे दिवंगत पिताजी एवम् चाचाओं का बैर लेने जायेंगे।''

देवनारायण साढू खटियाणी के पास जाकर कहता है, ''माँ, हमारी गायों के आभूषण दो।'' खटियाणी प्रत्युत्तर में कहती है, ''बेटे जब अकाल पड़ा था तब सारे आभूषण बेचकर हमारा जीवन निर्वाह चलाया था और जो कुछ बचा था, वह लेंबदे लूंटकर ले गया। सबकुछ खो चुके हैं।'' देवनारायण अपनी माँ की बात सालोर देवी को बताता है तो सालोर देवी देवनारायण से कहती है, ''साढू खटियाणी झूठ बोल रही है; हमारे आभूषण सातवें तहखाने में रखे हैं। मै तुम्हारे साथ डोळीराण में जाकर डोळीराण को रणथर बनाकर गुजोरों के खूनका बदला लूँगी। लेकिन गरीओरकोट में वापस नहीं आऊँगी।'' गायें डोळीराण के निकट पहुँचते बराबर राणा लेंबदे का महल काँपने

लगता है। सालोर एक बार आगे हिलोर ले रही है और एक बार पीछे हिलोर ले रही है। अतः डोळीराण का महल ढहने लगता है। राणा के आधे सरदारों को अपने पैरों तले रौंदती है। बीचमें आते बड़े-बड़े पत्थर सालोर की घात से उछल कर दूर जाकर गिरते हैं। सालोर बड़े जनूनपूर्वक डोळीराणको नष्ट करने पर तुली हूई है और देखते ही देखते सालोर के प्रकोप से न तो लेंबदे का वंश बचा है और न डोळीराण की समृद्धि। डोळीराण में राणा लेंबदे के वंशजों की सामूहिक हत्या के कारण रक्त की नदी बह रही है!

इस प्रकार सालोरदेवी की कृपा और सहायता से डोळीराण का सर्वनाश करके देवनारायण वापस गलीओरकोट में आ जाता है। अब देवनारायण स्वयं को एवम् गरीओरकोट को सजा रहा है। माँ से अनुमति लेकर देवनारायण बारह हल के बैल और 'खेडु' (कृषक) लेकर डाळीराण की ध्वंस की गयी भूमि को जोतने हेतु प्रस्थान करता है और वहाँ पहुँचकर अपने पुरखों के बैर की आग बुझाने उल्टे हल से उस डोळीराण की धरती को जोतता है। जोतते-जोतते गौरवपूर्वक कहता है, ''मैंने अपने पुरखों-मेरे गुजोरों की धरती का और उनके बैर का बदला लिया है।'' इस प्रकार देवनारायण सारे डोळीराण को रणथल बना देता है और उस भूमि पर काले कौए उड रहे हैं।

कथन अभिव्यक्ति की दृष्टि से वैषम्य

'बगड़ावत देवनारायण' एवं 'गुजरांनो अरेलो' दोनों भिन्न भिन्न जाति- प्रजाति के लोकमहाकाव्य हैं। एक का प्रादुर्भाव राजस्थान की गूजर जाति की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में हुआ है जब कि दूसरे का उत्तर गुजरात की भील प्रजाति की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में। अतः दोनों लोकमहाकाव्यों की सर्जन प्रक्रिया के समय की परिस्थितियों में वैषम्य होना नितान्त स्वाभाविक है। ये विषमताएँ निम्नांकित :

१. बगड़ावत लोकगाथा शीतऋतु की रात्रियों में गायी जाती है, जबकि 'गुजरांनो अरेलो' दीपावली के दिनों में रात या दिन में भी गायी जाती है।

२. बगड़ावत लोकगाथा देवनारायण के भोपे धनोपार्जन हेतु गाते हैं, जब कि गुजरांनो अरेलो का परिवेश त्यौहार का है। इसलिये उसका गायक विशाल जनसमूह के सामने उल्लास के साथ कथा को प्रस्तुत करता है। परिणामतः कथा को जितनी सामाजिक स्वीकृति मिलती है उतना उसके स्वरूप का विस्तार बढ़ता है।

३. बगड़ावत महागाथा में दो गायक होते हैं : एक प्रमुख गायक और दूसरा सहायक गायक। जब गंभीर प्रसंगों की भरमार हो जाती है तब सहायक गायक लोकरंजन के लिए बीच-बीच में कहीं-कहीं हास्यका पुट देता रहता है।

उत्सव होने के कारण अरेला गायक के सामने एक बड़ा लोकसमूह होता है। प्रमुख गायक को साथ देनेवाले अनेक रागिये बिना आयास मिल जाते हैं। गायक जितनी रससभरता से कथा आगे बढ़ाता है, उतने ही ज्यादा लोग सहभागी होते हैं। अरेला के प्रगटीकरण और प्रसारण में श्रोताओं का सामाजिक स्वीकार जितना ज्यादा मिलता है, उतनी ही कथा सजीव और सरस बनती जाती है। परिणामतः गुजरांनो अरेलो में आते 'झरमरिये' जैसे नृत्यगीत में तो पूरा लोकसमुदाय सहभागी होकर नाचने और गाने लगता है। लोकसमूह का यह पूरा उत्साह और उल्लास आर्थिक लाभ हेतु गाते बगड़ावत के गायकों को नहीं मिलता। उनका प्रमुख उद्देश आर्थिक उपार्जन ही होने से अरेला

गायक जैसा विशाल श्रोता और दर्शक समुदाय नहीं मिलता और न ही इतना सामाजिक स्वीकार और गौरव प्राप्त होता है।

बगड़ावत लोकगाथा का प्रमुख गायक विशिष्ट राजस्थानी वेशभूषा से सजता है। हाथ में रावणहथ्था जैसा लोकवाद्य रहता है। इसके अलावा वह लोकचित्रपट (फड़) का उपयोग करता है। सहायक गायक (वह स्त्री भी हो सकती है या पुरुष भी हो सकता है) के हाथ में एक लाठी के सहारे दीपक लटका रहता है। फ़ड़ में बगड़ावतों द्वारा किये गये पराक्रमों के चित्र बने होते हैं। गाथा गाते समय गायक सम्बन्धित प्रसंग को छड़ी के संकेत से दीपक के प्रकाश में दिखलाता है और लोकवाद्य के सहारे अभिनय के साथ कथा गाने लगता है। इस में घुँघरू का मनोरम स्वर भी भरता है। जिससे कथा की अभिव्यक्ति ज्यादा सजीव और रसाल बन पड़ती है।

इस तरह बगड़ावत देवनारायण महागाथा लोकभोग्य बनाने के लिए लोकशैली का चित्रपट और रावणहथ्थे जैसा लोकवाद्य रहता है। जब कि गुजरांनो अरेलो के गायक के पास न ही तो कोई लोकवाद्य रहता है न ही उसके दर्शकों के सामने कोई चित्रपट रहता है। फिर भी धार्मिक त्यौहार का पूरा लाभ उन्हें मिलता है। दीपावली के त्यौहार का धार्मिक वातावरण ही इतना जानदार होता है कि उन्हें श्रोताओं को एकत्रित करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। त्यौहार का आनंद प्राप्त करने के लिए योंही श्रोता उनके सन्मुख आते हैं।

बगड़ावत - देवनारायण महागाथा का गायक कथा के प्रारंभ एवं अंत में शंखघोष के साथ आरती करता है। जब कोई श्रद्धालु दर्शक कुछ नैवेद्य चढ़ाता है तो उसकी स्तुति के साथ उसके नाम का शंखघोष करता है।

'गुजरांनो अरेलो' का गायक प्रारंभ में धूप-दीप करके श्रीफल का नैवेद्य चढ़ाता है। परिणामतः एक विशिष्ट धार्मिक वातावरण सर्जित होता है। जिस से श्रोता धार्मिक वातावरण से वशीभूत होकर कथा सुनने के लिए आतुर हो जाते हैं। कथा की समाप्ति के बाद मातर (खीर जैसा मीठा प्रसाद) नाम का मीठा प्रसाद भी बाँटा जाता है। इसलिये भी श्रोता लंबे समय तक कथा सुनने और नृत्य का आनंद प्राप्त करने के लिए बैठे रहते हैं। ये सारे प्रसंग भीली सांप्रत जनजीवन के अविभाज्य अंग हैं। समगृ अरेला की समाप्ति के बाद गाँव का मुखिया प्रमुख गायक को बड़े सम्मान के साथ पगड़ी पहनाता है और सामाजिक गौरव देता है।

कथन अभिव्यक्ति की दृष्टि से साम्य :

१. भिन्न भिन्न प्रदेश के दो लोकमहाकाव्यों के भिन्न भिन्न गायक कथाबीज (कथाघटक) परंपरा में से ही प्राप्त करते हैं।
२. दोनों गायक परंपरा के वाहक, लोकसंगीत के साधक और कुशल नट होते हैं।
३. कथा दोनों के मानस में परंपरित ढंग से पहलेसे ही विद्यमान होती है। किन्तु वे अपने श्रोता और दर्शकों को सुनाने के लिए कथा गाते हैं। अतः कथा बड़ा रूप लेगी या छोटा स्वरूप धारण करेगी या कैसा कलात्मक स्वरूप धारण करेगी, ये बातें श्रोता और दर्शकों की मनःस्थिति पर आधारित हैं।
४. दोनों गाथाएँ भिन्न-भिन्न जाति की धार्मिक आस्था में से जन्म धारण करती हैं। इसलिए दोनों कथा के श्रोता धार्मिक मर्यादा निभाते हैं।
५. दोनों गाथाओं के गायक अपनी कंठस्थ गेय कला को अपने श्रोता के सांनिध्य में नया रूप देते हैं। अतः श्रोताओं की मनः स्थिति का प्रभाव उनकी कथनकला पर पड़ता है।

अतः वाहक के मानस में स्थित गाथा के प्रगटीकरण और प्रसारण में श्रोताओं का सामाजिक स्वीकार और प्रसारित होती गाथा में उनकी धार्मिक श्रद्धा, समाज की परंपराओं में विश्वास और उनमें आती घटना और पात्रों को सच्चे मानने की आस्था इन्होंने ही दोनों प्रदेश की गाथाओं को अब तक जीवित रखा है।

वर्णनक्रम की दृष्टि से साम्य :

६- दोनों लोकमहाकाव्यों का वर्णनक्रम एक निश्चित प्रणाली के अनुसार ढला हुआ रहता है। दोनों प्रदेशों के गाथा गायक हरेक प्रसंग को बढ़ाचढ़ाके गाते हैं। आरंभ में देवी-देवताओं (जो उनके गोत्र - देवी देवता होते हैं) की वंदनारूप स्तुतियाँ गायी जाती हैं जो संभवतः श्रोताओं की तदनुरूप मनःस्थिति को मोड़ने के लिए प्रयुक्त होती हैं। फिर धीरे-धीरे मूल कथानक के प्रसंग-घटनाओं पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं। दोनों प्रदेशों के लोकमहाकाव्यों में प्रसंग-घटनाओं का घटाटोप होता है, जो प्रमुख गायक के विशिष्ट कथन द्वारा भिन्न-भिन्न चरित्रों का विकास करती हुई दर्शकों को रसानंद में डुबो देती हैं।

प्रसंग-घटनाओं की दृष्टि से वैषम्य

प्रसंग घटनाओं की दृष्टि से समान लगनेवाले दोनों महाकाव्य भिन्न-भिन्न समाज एवं संस्कृति की पृष्ठभूमि में आविर्भूत होने से दोनों के कथानक में स्थित प्रसंग घटनाओं में काफी फ़र्क है। जो वैषम्य निम्नांकित है :

(अ) गुजरांनो अरेलो की प्रथम पंखुड़ी (भील जिसे पाँखड़ी कहते हैं) में आते 'हरिओम' मंड़ोवरा देश के राजा थे, जबकि बगड़ावत लोकगाथा में 'हरिसिंह बीसलदेव चौहान के अजमेर राज्य में रहनेवाले वीर पुरुष थे।

हरिओम ने कुम्हार स्त्री के पुत्र के बदले में जाकर उजोर नगरी के नगरजनों को अत्याचार से बचाने हेतु शेर (हिल्लको) का शिकार किया था, भीली लोकगाथा के हरिओम ने शिकार 'बहुजन हिताय' सिर्फ एक बार किया है, जबकि बगड़ावत महागाथा में हरिसिंह ने शेर का शिकार अपने व्यक्तिगत शौक और सुख के लिए किया है। प्रथम घटना में समष्टि की मंगल भावना छिपी है। जबकि दूसरी घटना में व्यक्ति की निरे स्वार्थ की भावना !

हरिओम शेर के शिकार के बाद मध्यरात्रि झांझर बावड़ी में रक्तरंजित अपना खड़ग धोने के लिए जाते हैं; तब चाँदनी का प्रकाश खड़ग पर पड़ता है। परावर्तित प्रकाश की वह किरण पूर्वराग से व्याकुल इलोर-किलोर कुँवरी के पेट में प्रविष्ट होती है और उसका गर्भ धारण होता है। फलतः बाघजी का जन्म होता है। जबकि महागाथा में हरिसिंह रात्रि के अंतिम पहर में मृत शेर को अपने कंधे पर डालकर आ रहे थे, तब पुष्कर घाट पर स्नान करके एक बालविधवा लौट रही थी। दोनों की दृष्टि एक हुई और वह गर्भवती हुई। अतः बाघजी का जन्म हुआ।

इस तरह दोनों गाथाओं में समान लगनेवाली घटनाओं में प्रमुख वैषम्य यह है कि बगड़ावत गाथा में दृष्टि विनिमय से गर्भधारण की घटना का कथाघटक (मोटिफ) पारंपरिक और रूढ़ है, जब कि खड़ग के प्रकाश से गर्भ रहनेवाली घटना का 'मोटिफ' चिरनूतन है और विश्व के 'मोटिफ इन्डेक्ष' में स्थान प्राप्त करे वैसा सबल है।

हरिओम ने इलोर-किलोर कुँवरी को विधिवत् विवाह करके उजोर नगरी के राजा से बाघ मारने के पुरस्कार के रूप प्राप्त की, जबकि हरिसिंह को विधवा लीला राजाज्ञा से स्वीकारनी पड़ी।

(ब) मुख सिंह का और शेष शरीर मनुष्य का देखकर भयभीत हरिसिंह ने अपने पुत्र

को जंगल में फेंक दिया, किन्तु बाघजी मरा नहीं। चीलने छाया की; सर्पने छत्र किया, बालक अँगूठा चूसने लगा। अतः हरिसिंह पुत्र को वापस ले आया। इस तरह गाथा गायक ने यहाँ बाघजी के जन्म के साथ दैवी चमत्कार जोड़ दिये हैं जो 'आदिम लोकतत्त्व' के परिचायक हैं।

जबकि भीली अरेला में वाहक ने ऐसे दैवी एवं पराप्राकृतिक तत्त्वों का आश्रय लिया नहीं है। यहाँ मवेशी चराते समय बाघजी द्वारा पशुओं के मुख नोचने का जिक्र है जो भीलों के मिश्र आहारी होने के प्रमाण के साथ उनकी वन्य संस्कृति का द्योतक है। इसके अलावा यह प्रसंग भीलों के 'कॉबरिया ठाकोर' जैसे मैले देवों की उपासना के समय दिये जाते पशु बलि की ओर भी संकेत करता है। खांडा सरोवर के तट पर बाघजी झुला बांधते है और गाँव की लडकियों को झूला झूलने के लिए लालायित करके छल से उनके साथ विवाह कर लेते हैं। जबकि गाथा में नगर की लड़कियाँ स्वयं झूला झूल रही थी। और बाघजी ने बल का प्रयोग कर झूला ऊँचे टांग दिया। फिर छल से उनके साथ विवाह सूत्र में बंधे गये।

(क) गाथा में बाघजी के पुत्र बगड़ावत कहलाये जबकि अरेला में गुजोर। दोनों महाकाव्यों के नायक बन में गायें चराते थे। गाथा में वर्णित प्रसंग के अनुसार एक गाय नित्य प्रातः आकर भोज की गायों में मिल जाती और सायंकाल जंगल में विलीन हो जाती थी। अनुगमन करने पर सवाई भोज ने देखा कि यह शंकर भगवान की गाय है। यहाँ शंकर भगवान के पास चराह माँगने की अन्य लोकगाथा जैसी परंपरित 'कथा रूढ़ी' का प्रयोग हुआ है। जबकि 'गुजरांनो अरेलो' के प्रसंग के अनुसार नवलाख गायें दूध देती बंद हो गईं और दूध के बिना बछड़े मरने लगे तब माता साढू ने अपने बेटों को व्यंग्य से धुत्कारा। अतः माता के व्यंग्य से आहत भोजा गुजोर ने बछड़े का रूप लेकर दूध पी जाते सपुनाथ अघोरी को ढूँढ़ निकाला और द्वन्द्वयुद्ध करके जैसे उबलते तेल में डाला तो वह स्वर्ण का हो गया। स्वर्ण मिलने से गुजोर समृद्ध हो गये। जबकि गाथा में सवाई भोज के अपूर्व साहस से प्रसन्न होकर भगवान शंकर ने पारसमणि, बूँली घोड़ी, बीजल खड़ग, बारह वर्षकी काया और बारह वर्ष की माया प्रदान की। फलतः वे समृद्ध हुए।

(ड) ज्यादा आर्थिक समृद्धि के कारण भिन्न-भिन्न जाति और प्रदेश की इन दो भिन्न कथाओं में कलाली के पास से अमूल्य हार के बदले में मदिरा पीने का जिक्र है। दोनों

गाथाओं में भोजा को मदिरा पिला के संतृप्त करने की शर्त पातू कलाली हार जाती है। अरेला के कथानक के अनुसार भोजा गुजोर को मदिरा का नशा नहीं होता तब जबरन हार छिन लेता है। जबकि गाथा के कथानक के अनुसार कलाली अमूल्य हार स्वेच्छा से दे देती है और सवाई भोज उसको धर्म की बहिन बना लेते हैं। इस तरह 'गुजरांनो अरेलो' में भोजा का उद्दंड चरित्र प्रकट होता है, जबकि गाथा में सवाई भोज के उदारमना चरित्र के दर्शन होते हैं। सवाई भोज के अनेक कार्यो में सहायक पातू कलाली के चरित्र का उदात्तीकरण होता है और वह आगे जाकर 'लोकमानस' में देवी के रूप में स्वीकृत हो जाती है।

चमत्कार और अतिशयोक्तिपूर्ण विधानों में आस्था 'सामूहिक लोकमानस' के विशिष्ट लक्षण है।

'गुजरांनो अरेलो' में भोजा द्वारा मदिरा पीने का चमत्कार एवं अतिशयोक्ति से भरा मनोहारी वर्णन है। मूँछ की ताकत से मदिरा स्वर्ग में जाती है और स्वर्ग का सिंहासन डोलने लगता है। आधी वापिस आती है तो गरियोरकोट में मदिरा की बारिश बरसने लगती है। अँगूठे की ताकत से पाताल में जाती है और मदिरा से चूर वासुकिनाग डोलने लगता है। फलतः भगवान गुजोरों को संहारने के लिए पृथ्वी पर आते हैं। भगवान के आगमन का 'पूर्वज्ञान' भोजा गुजोर के बड़े भाई मेहा गुजोर की सती स्त्री रखमा राठोड़ण को होता है। बगड़ावत-देवनारायण गाथा में भगवान के आगमन का 'पूर्वज्ञान' सवाई भोज के छोटे भाई त्रिकालदर्शी नेवाजी को होता है। दोनों भगवान के आगमन का कारण बतलाके अपने परिवार को सावध करते हैं। भगवान के आगमन के साथ उनकी सेवा-शुश्रुषा में जुटते हैं। सेवाचाकरी से प्रसन्न भगवान उनके नाश के लिए असफल होते हैं। अरेला में यह कार्य बारह वर्ष से भूखी भूखीयादेवी को देते हैं जब कि गाथा में भवानी को। भवानी अपनी दासी के साथ ईड़र कोट में जैमती के नाम से जन्म लेती है, जब कि अरेला में वह हियोर सोढ़ा के घर कमला दे रानी के कोख से झेलु के नाम से अवतार धारण करती है।

(इ) अकाल के आपत्काल में गुजोर जब हियोर सोढ़ा के देश नवलाख धेनु लेकर आते हैं तब गायें चराते समय भोजा गुजोर और झेलु के बीच पूर्वराग होता है। धीरे-धीरे यह पूर्वराग प्रकृति के मनोहारी प्रांगण में विकसित होता है और प्रगाढ़ प्रेम में परिणत होता है। 'गुजरांनो अरेलो' में जलक्रीड़ा करते नायक-नायिका के मुक्त और स्वाभाविक

स्नेह का विस्तृत वर्णन वाहक कथन रीति से करता है। झीलणी तालाब के जलक्रीड़ा के प्रसंग श्रृंगाररस से सराबोर हैं। ये प्रसंग भी भील संस्कृति के एक प्रमुख सामाजिक रिवाज 'गोठिया-गोठण' (प्रेमी-प्रेमिका) के द्योतक हैं। फलतः गायक ये प्रसंग उल्लास से गाता है और जनसमुदाय आनंदमग्न होकर नृत्य के विशिष्ट लय के साथ सहभागी होता है।

जब कि बगड़ावत लोकगाथा में उपरोक्त श्रृंगारिक प्रसंगों का नितान्त अभाव है।

(ई) यहाँ सीधे जैमती के विवाह के स्वर्ण नारियल का प्रसंग आता है। जैमती पुरोहित को भीतर बुलाकर कहती है, ''मेरा टीका किसी ऐसे व्यक्ति को देना जो बूँली घोड़ी पर चढ़ता हो, जिसके २८ भाई हैं।'' गोठों में जाकर सवाई भोज को टीका देना चाहा तो सवाई भोज ने कहा, ''टीका का संबंध समान लोगों में होता है, हम राजा नहीं है अतः टीका नहीं लेगें।'' छोटे भाई नेवाजी की सलाह से सवाई भोज टीका तो ले लेते हैं, किन्तु मँगनी राण के राणा से करवाते हैं। जब कि 'गुजरांनो अरेलो' में भोजा के द्वारा टीका स्वीकारने का उल्लेख नहीं है। यहाँ 'खाखर खेड़ा' से लौटती है, तब झेलु को पता चलता है कि डोळीराण के मेहमान विवाह तय करने आये हैं। मँगनी पक्की करने के लिये कन्या के पिता के घर जाने की प्रथा भीलों में आज भी प्रचलित है।

झेलु के विवाह के शुभ प्रसंग में दोनों महागाथाओं के लोकनायक अपने परिवार के साथ सजधज के आते हैं। अपनी संपत्ति का प्रदर्शन करते हैं और वे एकत्रित हुए लोकसमुदाय का मन मोह लेते हैं। उनके सामने राण के राणा का ऐश्वर्य फीका पड़ जाता है।

३- बगड़ावत लोकगाथा में आये बंदनवार तोड़ने के प्रसंग में चमत्कार के साथ साथ मानव का प्रकृतिकरण हुआ है। जो मानव नहीं कर सकता, वह कार्य प्राकृतिक तत्त्व कर सकते हैं। राणा खड़ग के द्वारा इसलिये नहीं मार सका, क्यों कि जैमती रानी नौ हत्थी सिंहनी बनकर सामने आयी। अतः हाथी डर गया और भागा। अतः राणा गिर गया और निशान चूक गया। यहाँ मानव का प्राणी में परिवर्तन होने के 'मोटिफ' (कथाघटक) का उपयोग हुआ है।

'गुजरांनो अरेलो' में हाथी और सिंहनी के प्रसंग का सर्वथा अभाव है। यहाँ राणा घोड़े पर सवार होकर बंदनवार तोड़ने के लिए आता है। राणा बंदनवार तोड़ने का साहस करता है किन्तु घोड़ा किला कूदने में निष्फल होता है। अतः लेंबदे राणा की

प्रार्थना से भोजा राणा के बदले बंदनवार तोड़ने के लिए आता है। कोट लाँघ ऊँचे बाँधे बंदनवार को तोड़ने के अपने अपूर्व साहस का परिचय तो भोजा देता है, किन्तु साथ-साथ बादल महल के झरोंके में खड़ी झेलु को अपना खड़ग देकर प्रेमिका का मन भी मोह लेता है। भोजा के अपूर्व साहस के प्रतीक इस खड़ग को हाथ में रखकर झेलु ने विवाह मंड़प में भाँवर ली और विवाह संपन्न किया, जबकि बगड़ावत लोकगाथा में वर्णित प्रसंग अनुसार जैमती ने हीरा दासी को भेजकर सवाई भोज का खड़ग मंगवाया और फिर उससे भाँवर ली। अरेला के इस प्रसंग में घोड़ी पर सवार भोजा के साहसिक चरित्र को मनन्य गरिमा दी है। विवाह संपन्न हो जाने के बाद विवाह मंड़प में नाचने का भील संस्कृति का एक सामाजिक रिवाज है। गुजोर मंड़प में नाचने के लिये आते हैं और नाचते नाचते स्वर्ण रजत के 'मणि-मोती' बिखेरते हैं। जनसमुदाय गुजोरों का यशोगान करते हुए मोती बटोरते हैं। बगड़ावत लोकगाथा में इस प्रसंग का नितान्त अभाव है। क्योंकि यह प्रसंग सिर्फ भील समाज की विवाह प्रथा का ही द्योतक है।

विवाह के समय दूल्हा एवं बारातियों के द्वारा पहेली बुझाने की प्रथा थी। पहेली के द्वारा दूल्हा एवं बारात के लोगों के बुद्धिचातुर्य की कसौटी होती थी। गुजरांनो अरेलो में झेलु के विवाह के समय यह परंपरा हीरा दासी के द्वारा निभायी गयी। बगड़ावत लोकगाथा में पहेली बुझाने की बात 'जैमती हरण' प्रसंग में आती है। विवाह के समय पहेली बुझाने का प्रसंग नितान्त स्वाभाविक है, जब कि हरण जैसे भागदौड़ और युद्ध से भरे प्रसंग में पहेली बुझाने की बात अस्वाभाविक लगती है।

(ऊ) दोनों गाथाओं में रानी के ठहरने के लिए नया महल बनाने का जिक्र है। जब महल तैयार होता है, तब झेलु कहती है, ''में नये महल में जाऊँगी किन्तु पुराने पलंग में शयन नहीं करूँगी''। जब चंदन वृक्ष का नया पलंग तैयार होता है तब वह शूकर के लहू से पलंग रंगने का बहाना बताती है। इस तरह राणा के मिलन के प्रसंगों को बड़े चातुर्य से टाल देती है, और अपने शील और सतीत्व की रक्षा करती है।

बगड़ावत लोकगाथा में जैमती के शील एवं सतीत्व की रक्षा के लिये वाहक ने बहुत से चमत्कारों का आश्रय लिया है। रानी के साथ चौपड़ पासे खेलते राणा की कलाई पकड़ने से रक्त का चुना, पलंग तैयार करने के आदेश पर राणा को कुत्ता बनाना और हीरा दासी को बिल्ली बनाना, राणा और कालु मीर को रानी में सिंहनी के दर्शन होना आदि प्रसंगों के विकास में वाहक ने चमत्कारों का आश्रय लिया है। ये चमत्कारिक

प्रसंग 'लोकमानसी' तत्त्वों के अनुकूल तो हैं ही किन्तु गुजरांनो अरेलो में बहानों के माध्यम से कथानक के विकास के साथ स्वाभाविक निखार आया है जिसका यहाँ नितान्त अभाव है।

'गुजरांनो अरेलो' में स्थित प्रसंग के अनुसार लेंबदे राणा मेरु-सुमेरु पर्वत पर सूअर मारने के लिए जाता है तब झेलु कुम्हार स्त्री का वेश धारण करती है और द्वारपाल को धोखा देकर नगर के बाहर निकल जाती है। होली की ज्वाला जैसी झेलु गुजोरों की नगरी गरीओरकोट आती है।

एक जैसे लगनेवाले दोनों महाकाव्यों के प्रसंगों की भिन्नता यह है कि गुजरांनो अरेलो में रानी अभिसारिका बनकर अनेक बाधाएँ पार करके गरीओरकोट पहुँचती है, जब कि बगड़ावत गाथा में रानी की इच्छा से नेवाजी और सवाई भोज रानी जैमती का हरण करते हैं और अपने नगर ले आते हैं।

(ऋ) बगड़ावत लोकगाथा के इस प्रसंग की दूसरी विशेषता यह है कि शिकार से लौटने के बाद रानी का सूना महल देखकर राणा को भारी आघात पहुँचता है। रानी की मृत्यु की आशंका होती है और उसकी आँखों में आँसू भर आते हैं। यहाँ लोकगाथा वाहक के द्वारा वियोग श्रृंगार का हृदयस्पर्शी वर्णन हुआ है। यह वियोग रानी की मृत्यु की आशंका के कारण करुण रस में परिवर्तित होता है।

राणा के वियोग का यह भावुक प्रसंग अरेला में नहीं है। रानी के चले जाने के बाद लेंबदे राणा सीधे गरीओरकोट पर चढ़ाई करता है। जबकि बगड़ावत गाथा में राणा ने सवाई भोज से रानी वापस लौटाने के लिए बगड़ावतों के गुरु रूपनाथ के माध्यम से काफी प्रयत्न किये हैं। नेवाजी ने तो प्रत्युतर दिया है, ''चौबीस भाइयों को मारकर ही रानी मिल सकती है।'' अतः निरुपाय राणा ने बावन गढ़ों के राजा को युद्ध के लिये बुलाया और गढों पर चढ़ाई की। युद्ध छिड़ गया। यहाँ बाघजी, नेवाजी के पुत्र, नेवाजी आदि वीरों ने युद्ध में किये पराक्रमों का अद्‌भुत वर्णन किया है। वीर एवं अद्‌भुत रस से युक्त इन प्रसंगों में वाहक की कथनकला परिसीमा पर पहुँची है। यह कथनयुक्त अद्‌भुत वर्णन वीर भूमि राजस्थान के लोकमानस का परिचायक है।

छः महीने की निद्रा में मग्न नेवाजी को जगाने के लिये किये प्रयत्न रामायण के कुंभकर्ण की निद्रा के समय किये गये प्रयत्नों की याद दिलाते हैं। यहाँ महाकविवाल्मीकि ने उपयोग में लिये प्राचीन 'मोटिफ' का प्रयोग वाहक ने किया है।

नेवाजी की पगड़ी में संजीवनी बुटी लेने के लिये जैमती का चील बनना, देवी के चक्र से नेवाजी का मस्तक कटने पर मस्तक के स्थान पर कमल का फूल प्रगट होना, वक्ष में दो आँखे निकलना, मस्तक के बिना युद्ध करना, नेवाजी का अद्भुत युद्धकौशल्य देखने के लिये चंद्र, सूर्य और मेघमाला सहित इंद्र का पृथ्वी पर आना आदि वीर और अद्भुत रस से भरे प्रसंग और घटनाओं का वाहक ने ओजपूर्ण वाणी में बड़ा चमत्कारिक कथन किया है। यहाँ वाहक की कथनकला शतधा खिल उठी है, जिसका 'गुजरांनो अरेलो' में सर्वथा अभाव है।

'गुजरांनो अरेलो' में युद्ध मानव नहीं प्राणि एवं निर्जीव चीजें करती हैं। यहाँ अरेला वहन में 'फेंटेसी थिंकिंग' (परिकल्पनीय विचारणा) का भरपूर उपयोग किया है, जो आदिम लोकमानस के योग्य ही है। अरेला में लावरी कुत्ती के बच्चे लेंबदे राणा के सामने बारह वर्ष तक युद्ध करते हैं। इसके बाद निर्जीव 'अमरघूंटे' लेंबदे राणा के सामने बारह वर्ष युद्ध करते हैं। यहाँ गुजोरों के वीरत्व का कहीं भी जरा सा भी वर्णन हुआ नहीं है। यहाँ 'अमरघूंटे' की करामत का ही वर्णन हुआ है।

अरेला वाहक की यह परिकल्पनीय विचारणा और आगे बढ़ी है और कमल में से आविर्भूत देवनारायण के चरित्र में पूर्ण निखार आया है। गायों की सहायता से डोळीराण नगरी का 'खड़ीया खोड़' (सर्वनाश) देवनारायण करते हैं।

निर्जीव को भी सजीव मानने की मनोवृत्ति आदिम मानस में थी। 'आदिम लोकमानस' यथार्थ और कल्पना में भेद करने में अशक्तिमान था। परिणामतः आदिमानव निर्जीव को भी सजीव मानता था। आदिमानव की इस प्रकार की मनोवृत्ति को विद्वानों ने 'फेंटेसी थिंकिंग' नाम दिया है। सर्वनाश निकालने वाले देवनारायण में इतने पारलौकिक तत्त्व जुड़ जाते हैं कि वे स्वयं लोकोत्तर हो जाते हैं। अतः वे लोकमानस में लोकदेवता के रूप में आरूढ़ होकर भीलों के देवरा के मंदिर में स्थान प्राप्त कर लेते हैं।

बगड़ावतों एवं गुजोरों के अंत की घटनाओं में भी काफी साम्य है। वीरों की मृत्यु के बाद की घटनायें करुण रस से सराबोर हैं। दर्शक एवं श्रोताओं की सहानुभूति युद्धभूमि में मरे वीरों की ओर ही है। करुण रस के साथ साथ आये बीभत्स रस से करुण प्रसंग और भी गहरे और हृदयस्पर्शी बन पड़े हैं।

अंत में बगड़ावतों का माँस भक्षण करते अस्सी हजार कुरज पक्षी और कटे गुजोरों के लहू से बनी नदी में से खप्पर भर-भर के पीती ईरु, रांपु, टुटी, टावली आदि नवलाख

देवियों का बीभत्स रस से भरा वर्णन दोनों लोकमहाकाव्यों में समान रूप से अंकित है। दोंनों लोकमहाकाव्यों के अंत की घटनाओं में भी काफी साम्य है। दोनों गाथाओं में देवनारायण अपने पितृओं का बैर लेते हैं। बैर लेने की भावना में अरेला की घटना में गायें ज्यादा सक्रिय हैं। वे यहाँ चरित्र के रूप में आती हैं और अपने स्वामी का बैर लेती हैं। बगड़ावत लोकगाथा में देवनारायण राणा का सिर काट कर उसे अपने बाप-काका के देवरे (समाधि) पर चढ़ाते हैं, तब यह परंपरित बैर भावना की घटना और भी प्रभावी बन पड़ती है।

बगड़ावत लोकगाथा में प्रमुख रूप में निम्नांकित रसों की अभिव्यक्ति हुई है : करुण, वीर, और अद्‌भुत। प्रासंगिक रूप में श्रृंगार, हास्य, बीभत्स आदि भी मिलते हैं। जब कि 'गुजरांनो अरेलो' में प्रमुख रस श्रृंगार, वीर और करुण रस है। गौण रूप में बीभत्स और अद्‌भुत रस हैं। उपरोक्त रस का उल्लेख आगे किया है, इसलिए यहाँ पुनरुक्ति की आवश्यकता नहीं है।

पात्रों की दृष्टि से

'गुजरांनो अरेलो' में 'भोजो' छोटाभाई है और 'मेहो' बड़ा भाई। फिर भी सब प्रमुख घटनाओं का विधायक भोजा ही है। लोकमहाकाव्य में वह ही अत्यन्त सक्रिय चरित्र है, जब कि मेहा सर्वथा निष्क्रिय पात्र है। वह (नामोल्लेख के अलावा) कोई विशिष्ट घटनाओं का सर्जक नहीं है।

बगड़ावत लोकगाथा में सवाई भोज बड़े भाई हैं और नेवाजी छोटे भाई। यहाँ नेवाजी ही सक्रिय चरित्र हैं। वे ही समगृ लोकमहाकाव्य में आच्छादित हो जाते हैं। वे ही प्रमुख घटनाओं के विधायक हैं।

दोनों गाथाओं के देवनारायण के चरित्र में देवत्व झलकता है। उसका उल्लेख आगे किया गया है। झेलु के पिता का नाम हियोर सोढ़ा है जब कि जैमती के पिता का नाम इड़देव है। अरेला की नायिका झेलु भूखियादेवी ही है किन्तु यहाँ लीलया मानव रूप धारण किया है। झेलु का चरित्रचित्रण अत्यधिक प्रभावशाली रहा है। उस में साहस के साथ बुद्धिमत्ता और चातुर्य मिला हुआ है। दृढ़ निश्चय तो उस में कूट-कूट कर भरा हुआ है। अपना अभीष्ट प्राप्त करने से कोई उसे डिगा नहीं सका।

'गुजरांनो अरेलो' में साढ़ू का भोजा गुजोर की माता के रूप में चरित्रचित्रण हुआ

है जब कि बगड़ावत गाथा में सवाई भोज की पत्नी के रूप में।

'गुजरांनो अरेलो' में आये स्त्रीपात्र जैसे झेलु, साढू खटियाणी, रखमा राठोड़ण, हीरा आदि का स्थान पुरुष पात्रों जैसा ही है। साढू खटियाणी और रखमा राठोड़ण की राय भोजो और अन्य गुजोरों को भी स्वीकार्य होती है। सही कार्यों में उनके आदेशों को मानते हैं। नहीं मानते तो उन कार्यों में असफल होते हैं।

राजस्थान की पुरुषप्रधान संस्कृति में से प्रादुर्भूत हुई बगड़ावत-देवनारायण लोकगाथा में जैमती और नेतु को छोड़कर शेष स्त्री पात्र पुरुष पात्रों के सामने श्रीहीन लगते हैं। सती प्रथा का निर्वाह भी नेतुजी के पात्र के द्वारा किया गया है। भील संस्कृति स्त्री को एक विशेष दरज्जा और महत्त्व देती है। इसकी झांकी 'गुजरांनो अरेलो' में भी हुई है।

मोटिफ (अभिप्राय, कथाघटक) की दृष्टि से :

स्टिथ थामसन ने अभिप्राय (मोटिफ) कोश का प्रथम संस्करण सन् १९३५ में प्रकाशित किया। यह कोश, विश्वभर की लोककथाओं के अपूर्व समतामय मूल भावों का संगृह, इस कोश का जन्मदाता बना।

थामसन के विचार में अभिप्राय, कथा का लघुत्तम तत्त्व है, जो परम्परा में स्थिर रूप से रहने की शक्ति रखता है। इस प्रकार की शक्ति रखने के लिए उस में कुछ असाधारणता और अपूर्वता होनी चाहिए। कथाघटक कथानक के निर्माणतत्त्व हैं।

कथानक का मूल तत्त्व अभिप्राय या कथाघटक ही है और लोककथाओं, लोकमहाकाव्यों और लोकाख्यानों के अध्ययन में वह विशद् स्थान रखता है।

'मोटिफ' के बारे में डॉ. सत्येन्द्र कहते हैं, ''लोककथा का परम्परागत रूप, सांस्कृतिक रूप, मनोवैज्ञानिक रूप, नैतिक रूप और परिभ्रमणकारी रूप अभिप्राय ही परिलक्षित होता है। संसार भर की लोककथाओं की एकता इसी के द्वारा अभिव्यक्त की गई है।''

सभी देशों के लोकसाहित्य में इस प्रकार के कथानक- रूढ़ि का उपयोग हुआ है। कथाघटकों में लोकमानसिक कल्पना का विलास होता है। इन में गाथाकार के अनुभवों की अन्विति होती है।

बगड़ावत लोकगाथा और गुजरांनो अरेलो में कतिपय अभिप्राय या कथानक रूढ़ियों में साम्य है, जो निम्नलिखित हैं :

१. रूप तथा योनि परिवर्तन : लोकगाथा और अरेला में इस कथा घटक का उपयोग हुआ है। बगड़ावत में जैमती कभी कुरज पक्षी का रूप लेकर अपना कार्य करती है। अरेलो में झेलु 'हुसणो' (बाज) का रूप लेती है और खेमला काहीदी को मुर्गा बना के मारती है।

२. पुष्प का उत्तर : बुद्धि परीक्षा के अभिप्राय या कथानक रूढ़ि का उपयोग बगड़ावत लोकगाथा और गुजरांनो अरेलो में हुआ है। जैमती या झेलु हीरा दासी से कहती है कि बाग में जाकर वह पुष्प का उत्तर लाये, ताकि वह यह जान सके कि राणा से बगड़ावत या गुजोर ज्यादा बुद्धिमान हैं।

३. नायक की अलौकिक उत्पत्ति : दोनों लोकमहाकाव्यों में देवनारायण की उत्पत्ति अलौकिक ढंग से कमल के फूल में से बतायी गई है।

४. प्राणि का मानववाणी में बात करना : बगड़ावत लोकगाथा में नेवाजी का अश्व मानववाणी में बोलता है। वह नेतुजी को शाप भी देता है। गुजरांनो अरेलो में सालोर गाय (प्रमुख गाय) देवनारायण के पास दीपावली के दिन अपने आभूषण मानववाणी में माँगती है और डोळीराण का नाश करने में सहायक भी होती है।

५. दृष्टिनिक्षेप से गर्भाधान : बगड़ावत गाथा में बाघजी के जन्म के संदर्भ में इस कथानक रूढ़ि का प्रयोग हुआ है। बाघजी का मुख सिंह का व धड़ मानव का था। साध्वी लीला ने एक रात्रि हरिसिंह को कंधे पर सिंह रखकर आते देखा, इस दृष्टिनिक्षेप से ही वह गर्भवती हो गई। परिणामतः उसके सिंह के मुखवाला पुत्र उत्पन्न हुआ।

'गुजरांनो अरेलो' में हरिओम शेर के शिकार के बाद मध्यरात्रि झांझर बावड़ी में रक्त सना अपना खड़ग धोने के लिए जाते हैं। तब चाँदनी का प्रकाश खड़ग पर पड़ता है। परावर्तित प्रकाश की वह किरण पूर्वराग से व्याकुल इलोर-किलोर कुँवरी के पेट में प्रविष्ट होती है और उसको गर्भ रहता है। फलतः बाघजी का जन्म होता है।

इस तरह दोनों गाथाओं में समान लगनेवाली घटनाओं में प्रमुख वैषम्य यह है कि बगड़ावत गाथा में दृष्टिविनिमय से गर्भ रहनेवाली घटना का कथाघटक (मोटिफ) परंपरित और रूढ़ है। जब कि खड़ग के प्रकाश से गर्भ रहनेवाली घटना का 'मोटिफ' चिरनूतन है और विश्व के 'मोटिफ इन्डेक्ष' में स्थान प्राप्त करे वैसा सबल है।

आम तौर पर लोकमहाकाव्यों में एक मूलभूत लक्षण यह मिलता है कि इनकी रूपरचना में कथातत्त्व एवं संगीततत्त्व का समन्वय मिलता है। इन दोनों विशेषताओं के

अलावा इन दोनों महाकाव्यों में नृत्य का भी अद्‌भुत समन्वय हुआ है।

कला की दृष्टि से देखें तो दोनों गाथाओं में लोकनाटक का दृश्य तत्त्व, लोकगीत की गेयता, लोककथाका कथातत्त्व, एवं संवादों में लोकोक्ति तथा मुहावरों की भरमार है। दोनों में रस, अलंकार, ध्वनिव्यंजना आदि का प्रकृत विलास है।

इन दोनों गाथाओं में जनता और राजा के बीच संघर्ष व्यंजित हुआ है। गाथारचयिता, गायक और दर्शक-श्रोता तीनों की ही सहानुभूति बगड़ावतों के प्रति है। राजन्य संस्कृति के प्रति तिरस्कार की भावना इस में स्पष्ट है। इसके अतिरिक्त गाथा में लक्ष्य यह दिखलाना है कि अधिक गर्व मनुष्य के नाश का कारण बनता है और यह शाश्वत सत्य गाथारचयिता के मन में परंपरा से स्थित है। लोकमानस मानता है कि गर्वशील व्यक्ति का भगवान नाश करता है। इसलिए गुजोरों का नाश करने के लिए भूखियादेवी ने झेलु के रूप में और बगड़ावतों का नाश करने के लिए दुर्गा ने जयमति के रूप में अवतार लिया है।

उपसंहार

लोकसंस्कृति का एक बड़ा विभाग लोकवार्ता या लोकविद्या का है। लोकवार्ता में आदिम जातियों तथा ग्रामों एवं नगरों में रहनेवाले साधारण जनसमुदाय की सांस्कृतिक विशेषताएँ विद्यमान रहती हैं। ये विशेषताएँ लोकसंस्कृति के संपूर्ण धरातल की परिचायक कही जा सकती हैं।

लोकविद्या के एक गौण विभाग में लोकसाहित्य का स्थान है। लोकसाहित्य जिन लोगों के कंठ से प्रस्फुटित होता है, उनकी जीवित सांस्कृतिक संपत्ति है।

लोकसाहित्य के एक गौण विभाग में लोकमहाकाव्य या लोकगाथा का स्थान है। लोकगाथा एक विशिष्ट प्रकार का लोककाव्य है। सामान्यतः इस की उत्पत्ति किसी प्रेरणादायक अथवा प्रसिद्ध वस्तुगत घटना या जीवन में घटित कार्य-कलाप से होती है। किसी घटना और उसके प्रमुख पात्रों के जीवन, उनकी समस्याएँ, उनके प्रेम, क्रोध, संकट, संघर्ष, बलिदान, पराक्रम और मार्मिक भावनाओं के वर्णन से बढ़ते-बढ़ते वह रोचक कथा एक भावप्रधान गाथा बन जाती है।

बगड़ावत लोकगाथा एवं गुजरांनो अरेलो के अध्ययन से पता चलता है कि लोकमहाकाव्यों में उस समाजविशेष के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक तौरतरीकों, सम्बन्धों, मान्यताओं तथा जीवनादर्शों का सर्वांगीण चित्र प्रतिबिंबित रहता है। गाथा में वर्णित चरित्रों की भावनाएँ एक हद तक उस समाज की प्रचलित मान्यताओं का प्रतीक होती हैं। चरित्रों के द्वंद्व और संघर्ष उस जमाने के प्रचलित अंतर्द्वन्द्वों को उभारकर प्रस्तुत करते हैं। प्रेम, वात्सल्य, वीरता, बलिदान आदि मनुष्यजाति की सर्वमान्य भावनाएँ हैं, लेकिन लोकगाथा के पात्रों के माध्यम से इन्हें विशेष रूप से प्रदर्शित किया जाता है। उन में ये केवल वैचारिक मान्यताएँ न रहकर वास्तविक जीवन की अनुभूतियाँ बन जाती हैं। यही कारण है कि लोकगाथा का पात्र अपने जैसा ही इन्सान लगता है, जिसमें अच्छाइयाँ, बुराइयाँ, कमियाँ, कमजोरियाँ सब एक साथ समाहित मिलती हैं। इस दृष्टि से इन लोकगाथाओं को यदि उस जमाने की प्रचलित सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक स्थितियों की सही जानकारी प्राप्त करने का आधार बनाया

जाये तो इस कार्य के लिए वे अत्यन्त उपयोगी साबित हो सकती हैं।

वर्तमान जीवन-रीति और कंठस्थ साहित्य द्वारा कोई खास जातिविशेष की संस्कृति का इतिहास लिखने के प्रयत्न किये गये हैं। कंठस्थ साहित्य से जो कुछ प्राप्त होता है वह सिर्फ वर्तमान जीवनसंदर्भ को ही व्यक्त करता है, ऐसा नहीं कह सकते। उसमें बहुत कुछ प्राचीन होता है। वर्तमान संस्कृति सिर्फ वर्तमानकाल का व्यवहार और चिंतन की प्रथा ही नहीं है। वह परंपरा भी है। परंपरा में बहुत कुछ पुराना भी रक्षित रहता है। ये रक्षित अवशेष अपने युग का, तत्कालीन संस्कृति का इतिहास भी प्रगट करते हैं। काल के प्रवाह में स्थिर ये अवशेष और आज दिन तक चली आती परंपरित जीवन-रीति कोई भी संस्कृति की रचना की व्याख्या का एक मूल्यवान साधन है। इन रक्षित अवशेषों के अन्वेषण के माध्यम से हम किसी भी काल के इतिहास तक पहुँच सकते हैं।

लोकगाथा में वर्णित बगड़ावतों के इतिहास का अन्वेषण करने से पता चलता है कि 'गुजरांनो अरेलो' में वर्णित गुजोर और बगड़ावत दोनों एक ही हैं।

बाघारावत के पुत्र बाघड़ावत या बगड़ावत के नाम से प्रसिद्ध हुए। यह बाघा अजमेर के हरिराम चौहान का पुत्र था। इसके बारह रानियाँ थीं। इन में से प्रति एक रानी से दो-दो पुत्र उत्पन्न हुए। इन चौबीस पुत्रों में सवाई भोज या गुजोर विशेष उल्लेखनीय है। ये अपने बारह भाइयों से छोटे तथा ग्यारह से बड़े थे।

'भारतीय विद्या' (वर्ष-२ अंक-१ पृ.६९) में प्रकाशित 'राजस्थान के कुछ ऐतिहासिक टिप्पण' में बगड़ावतों का उद्भवकाल विक्रम संवत् ९८२ में कहा गया है। इन टिप्पणों का आधार जैन मुनि की हस्तलिखित पुस्तक है।

उपर्युक्त आधार पर वि.सं. ९०० से १००० के मध्य सवाई भोज का समय ठहरता है।

यहाँ तुलनात्मक अध्ययन में उपयोग में ली गई दोनों गाथाओं के जरिये बगड़ावतों के इतिहास से भी पूर्वकालीन इतिहास को खोज सकते हैं। क्योंकि इन लोककथाओं का पिंड़ प्राचीन परंपरा है और ऐसी गाथाएँ उस पुरातन युग से परिवर्तित होती हुई चली आती हैं; जब आदिमानव अपनी आरंभिक अवस्था में सारी प्रकृति को विशिष्ट शक्तियों से सम्पन्न एवं सचेतन मानता था। इसी कारण बगड़ावत-देवनारायण लोकगाथा एवं गुजरांनो अरेलो जैसे लोकमहाकाव्यों में किसी देश के धार्मिक विश्वास, प्राचीन देवी-देवता (जैसे भूखियादेवी, हीरु, रांपुं, टुटी-तावली आदि) अथवा नायकों (जैसे सवाई

भोज, भोजो गुजोर, नेवाजी आदि) का अलौकिक वर्णन मिलता है। इनके साथसाथ इन दोनों महागाथाओं में आदिम जातियों के धार्मिक विधि-विधानों पर भी व्यापक प्रकाश पड़ता है। ये दोनों लोकगाथाएँ प्रेम, वीरता, बलिदान जैसे जीवनमूल्यों को निश्चित करके उन्हें स्थिरता एवं स्थायित्व प्रदान करती हैं। अतः सांस्कृतिक दृष्टि से भी इनकी विषयवस्तु महत्त्व रखती है।

'फ्रेजर' मानव संस्कृति के विकास को तीन युगों में विभाजित करते हैं। जादू का युग, धर्म का युग, और विज्ञान का युग।

जादू के युग में मनुष्य प्रकृति की सजीवता में विश्वास करता था। आदिम समय के इस विश्वास के कारण गुजरांनो अरेलो और बगड़ावत लोकगाथा में देव-देवी और मानव के अद्‌भुत कार्यों के वर्णन के साथ साथ गायों, घोड़ों जैसे प्राकृतिक जीवों का मानवीकरण होता है। मानव जैसे क्रियाकलाप करते ये निसर्गतत्त्व देव-देवी और मानव को चमत्कारिक ढंग से सहायता करते हैं। गुजरांनो अरेलो में इसी विश्वास के कारण सालोर गाय वृद्धा का रूप लेकर भोजा पर प्रसन्न होती है और डोळीराण का सर्वनाश करने में देवनारायण को सहायक होती है। इसी श्रद्धा के कारण बगड़ावत लोकगाथा में नेवाजी का अश्व मानववाणी में बोलता है और नेतुजी को शाप देता है।

इन दोनों गाथाओं में प्रकृति के तत्त्वों के मानवीकरण के साथ मानव का भी प्रकृतिकरण हुआ है। यह प्रकृतिकरण मानवपात्रों को विराटता प्रदान करता है। गुजरांनो अरेलो में झेलु खेमला काहीदी को मानवरूप में मार नहीं सकती है। इसलिए वह खेमला को मुर्गा बनाती है और स्वयं 'हुसणो' (बाज) बनकर झपटती है और उसको मारकर अपने सतीत्व का रक्षण करती है। इसी तरह बगड़ावत लोकगाथा में जैमती राण के राणा को कुक्कुट (मुर्गा) और हीरा दासी को बिल्ली बनाकर रातभर दोनों को लड़ाती है और अपने सतीत्व की रक्षा करती है।

कितनीही बार लोकनायकों के चरित्रों में मानव के प्रकृतिकरण के कारण लोकोत्तरता या दिव्यता का पक्ष इतना सबल बन जाता है कि लोकनायक ही लोकोत्तर अवतार बन जाते हैं और वे स्वयं प्राकृतिक शक्तियों का नियमन करते हैं। प्रकृति के मानवीकरण के कारण गुजरांनो अरेलो का लोकनायक भोजा केसर घोड़ी पर सवार होकर स्वर्ग तक उड़ सकता है और मूँछ की ताकत से उछाली शराब से वैकुंठ का सिंहासन डोलने लगता है। प्रकृति के मानवीकरण के कारण नेवाजी का मस्तक कटता है, तब उनके धड़ पर

कमल उग निकलता है और छः मास तक युद्ध करते हैं। सामूहिक लोककल्पना में स्थित मानव के प्रकृतिकरण के कारण महान लोकनायक स्वयं प्राकृतिक शक्ति बन जाते हैं और उनका इतनी हद तक प्रकृतिकरण और उदात्तीकरण हो जाता है कि वे स्वयं देवता बन जाते हैं। उनके इन गुणों के कारण डुंगरी भील आदिवासियों के जलुकार के देवता काले-गोरे भैरव के स्थान पर देवता का रूप धारण करके भोजो-मेहो बिराजते हैं और देवरा के मंदिर में स्थान प्राप्त करते हैं। इन्हीं गुणों के कारण सवाई भोज और देवनारायण भी राजस्थान की गुजर जाति के देवता बन जाते हैं और मंदिरों में स्थान प्राप्त कर लेते हैं।

इस तरह ये लोकगाथाएँ नये नये युग की सामूहिक आस्था को लेकर आगे बढ़ती हैं। दोनों गाथाओं में आये चरित्र जो स्वयं देवता बन गये हैं वे आज भी उन जातियों के सक्रिय देवी-देवता हैं। उनकी उपासना करनेवाले भोपों में आज भी वे अवतरण करते हैं ऐसी आस्था पूरा समाज रखता है। इसलिए ये देव मनुष्य की बीमारी भी दूर करते हैं। बीमार मनुष्य को जब देवरे में लाते हैं तब भोपा विशिष्ट प्रकार के आवेश का अनुभव करता है। परिणामतः उस में स्वयं देवता या कोई अलौकिक शक्ति ने अवतरण किया है ऐसा देवी-देवता के प्रति प्रगाढ़ आस्था के कारण बीमार मनुष्य और पूरा समाज मानता है। परिणामतः भोपा के धार्मिक अनुष्ठान और उसके बोलने मात्र से बीमार मनुष्य में से रोग का निवारण होता है, ऐसे पूरा समाज मानता है।

इस तरह भीलों में प्रचलित 'गुजरांनो अरेलो' जैसी गाथाएँ और गुजर जाति की बगड़ावत देवनारायण जैसी गाथाएँ सिर्फ जिज्ञासा की तुष्टि प्राप्त करने की या कथाश्रवण या नृत्य का आनंद प्राप्त करने का साधन मात्र नहीं है, किन्तु समाज के महत्त्व के व्यवहारों को कार्यशील बनाने का शक्तिशाली माध्यम है। समाज की वास्तविकता के साथ जुड़ी इन गाथाओं का त्यौहार, अनुष्ठान और आस्था के साथ घनिष्ठ संबंध है। परिणामतः वे परिवार और समाज के बीच एकता स्थापित करती हैं। इस तरह लोकगाथाओं का प्रमुख उद्देश्य प्रचलित जीवनप्रणालि का समर्थन और संरक्षण है।

परिशिष्ट-१

आधार ग्रंथ

१. 'बगड़ावत देवनारायण महागाथा', सं. चूड़ावत लक्ष्मीकुमारी, प्र. राजकमल, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण १९७७

२. 'बगड़ावत लोकगाथा', सं. डॉ. शर्मा कृष्णकुमार, प्र. साहित्य संस्थान-राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर, १९७०

३. 'गुजरां नो अरेलो' (गुजराती), सं. डॉ. पटेल भगवानदास, प्र. डॉ. भगवानदास पटेल, जामला, हिम्मतनगर, १९९३

परिशिष्ट-२

पारिभाषिक शब्दावली

बगड़ावत देवनारायण

आकड़ साड़ा : राजस्थान का एक गाँव

कालु मीर : राण के राणा का पासवन (नौकर)

कुरज : पक्षी का नाम

कुरलाहट : कुरज पक्षिओं की आवाज

गोठ : बगड़ावतों की राजधानी

छोछु भाट : बगड़ावत लोकगाथा का रचयिता

जैमती : दुर्गा, जिसने बगड़ावतों का संहार करने के लिए ईड़रकोट के ईड़दे सोलंकी के घर जैमती के नाम से जन्म लिया था

तोरण मारना : तलवार से तोरण (बंदनवार) छूने की विवाह की एक विधि

देवरा : लोकदेवता का मंदिर

देवनारायण : कमल के फूल से आविर्भूत सवाई भोज के दिव्य पुत्र, 'गुजरांनो अरेलो' के अनुसार भोजा गुजोर के भाई

नवलखा उपवन : राण के राणा का बाग

नेवाजी : सवाई भोज के छोटे भाई

फड़ : लोकचित्रपट, जिसकी रचना भीलवाड़ा, शाहपुरा तथा चितौड़ के जोषी चितेरे करते हैं और गुजर भोपे वाचन करते हैं।

पातु कलाली : राण नगरी की रखात कलाल स्त्री

बगड़ावत : बाघारावत के पुत्र, बाघड़ावत-बगड़ावत

बीजल खड़ग : बिजली जैसी चमकती दिव्य तलवार

बूँली घोड़ी : सवाई भोज की वीरता से प्रसन्न शंकर भगवान ने भेंट दी हुई दिव्य घोड़ी।

भोपा : मैली विद्या जाननेवाला ओझा

मतवाल : मेजबानी

राण : जैमती के पति राणा की राजधानी की नगरी

राण-भाण : राणा की सेना के दो योद्धे

रूपनाथजी : बगड़ावतों के गुरु

सवाई भोज : बाघा रावत के पुत्र (वे अपने बारह भाइयों से छोटे तथा ग्यारह से बड़े थे।)

सादूजी : सवाई भोज की रानी

संजीवनी बुटी : अमर बुटी

सुमिरन : लोकगाथा के आरंभ में आती देव-देवी की स्तुति

गुजरांनो अरेलो

अमरघूंटा : जादू से सर्जित मुशल जैसा शस्त्र

अमल कसुंबा : अफीम को पानी में मिला करके बनाया जानेवाला मादक पेय।

अरेलो : दीवाली के दिनों में नृत्य के साथ गाया जाता कथागीत

कांबरिया : एक जंगली बेल (लता)

खाखर खेड़ा : हरीभरी घास से समृद्ध क्षेत्र का नाम

गरीओरकोट : गुजरों की राजधानी

गुजरा : एक गोत्र का नाम

घेंस : छाश और तांदुल की मिलावट से बनता एक खाना

घोड़ालियुं : आदि जाति का एक प्रकार का वाद्य

चूरमा : मीठा प्रसाद (घी, गेहूँ और गुड़ की मिलावट से बना)

छः और छव्वीस : लोकवार्ता कथन के समय किसी संख्या को इस प्रकार कहने का ढंग है, वैसे उसे बत्तीस कहा जा सकता है।

जलुकार : प्रलय

जालरिया टोप : मुकुट

झेलु : भूखियादेवी, जिसने गुजोंरों का संहार करने के लिए हियोर सोढ़ा के घर झेलु के नाम से जन्म लिया था।

झेंझणिया झोड़ : झेंझणी नाम के घास-वनस्पति से समृद्ध वनक्षेत्र

ढागजी : भोजा गुजोर के छोटे भाई का नाम

डोळीराण : लेंबदे राणा की राजधानी का नाम

डोडिया बरु : विशेष प्रकार की घास

दूती मालिन : षड्यंत्र रचने में माहिर स्त्री

देरावट नगरी : सपुनाथ अघोरी की नगरी

भाथु : कलाल स्त्री

मड़ोवरा : जोधपुर के पास का मंड़ोवर नगर

मेर-सिमेर : मेरू-सुमेरू पर्वत

लेंबदे : डोळीराण के राजा, झेलु के पति

पाग : पगड़ी

वासुकि : पाताल का राजा (भीलों का विश्वास है कि उसके फन पर पृथ्वी टिकी है)

सपुनाथ : शैव संप्रदाय के एक अघोरी का नाम

साढु खटियाणी : भोजा गुजोर की माता का नाम

सालोर : लंबे और सीधे सींगवाली प्रमुख गाय

हखला : भोजा गुजोर के छोटे भाई का नाम

हरिओम : भोजा गुजोर के पितामह

हियोर सोढ़ा : झेलु के पिता का नाम

होलागण : सोलंकी गोत्र की स्त्री